

DPN 5506

Title : सतसैया SATASAIYĀ

Run. No. 6197

Cat. No. 85 न्हू

Micro. No.

Subject गीति पौर्ण

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / Old Hindi

Size in cms. 23.5 x 16.5 Folios 18 Lines (in a page) 26

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator विहरीदास

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 1826

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu / one side yellow

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

समाप्ति वाक्य Colophon Post Colophon.

रक्थौ सां करी दुजु मे कृत भोक्त कृतकृत एत ॥

मंद मंद माला मु रेग नि सुदन आवत जाल ॥६६॥

इति विहंगो दास कृत सत सैया संपूर्ण ॥ ॥

प्रवत १८२६ माघ शुदि ७ ऐज इ तदिने लिखितं ॥ शुभम् ॥

दक्षकेशवं धत्तमानयेतिवयोरैक्यात्



खीनहिजाई ॥३३॥ मनमोहनसोमोहकरि
 हृद्यनरपामसंभारि. कुंजविहारीसोविह रिगिधारिहिउरधारि ॥३४॥ घर
 घरडोलतदीननरजनुजनुजचितजाई ॥३५॥ लोभचसमाचषनलघु
 पुनिवडोलषाई ॥३६॥ यतवारीमालापकरिओरनकछूउपाउ. तरि
 सैसारपयोधिकोहरिनामिकरिनाउ ॥३७॥ भजनकहोतातेभजोभाजो
 नएकेवाहूरिभजनजातेकह्योसोतेभजोगवार ॥३८॥ यहबेरियानहि
 ओरकीहंकरियाओवहिसोधि. पाहननाउचढाईजैहिकीहूपारपयोवि
 ॥३९॥ दूरिभजनप्रभुपीठिदेगुणविसारनकाल. प्रगटतनिगुणनिकटिहि
 चंगरीगोपाल ॥४०॥ यभवपाशवारकेठलेधिपारकोजाई. तियछविघा
 याग्राह्णीगहेवीचहीआई ॥४१॥ मीतननीतगलीतहैजोधरिएधनतोरि
 खापखरचेजोपुरेतोजारिएकरोरि ॥४२॥ कोछूयेएहिजालपरिमन
 कुलेगअकुलात. ज्योज्योसुरसिभजोचहतज्योज्योउरझतजात ॥४३॥
 गोधनतहूरिवोहिसघरएकलेहिउजाइ. समुझिकरैगासीसपर. परतयसु
 केयाई ॥४४॥ जातजातचितहोतहैज्योजियमैसंतेछु ॥सिंगाररेंसं॥ होतहोतजोहोई
 तोहोतघनीमैमोछु ॥सिंगाररससठनायक ॥४५॥ तोहानिरमोहोलज्योमोहोर
 होसजाइ. आनआसआवैनहाआसआवैआउ ॥४६॥ दृष्टनारिक ॥उरैनतिघर
 घरोदयेयेरावरीकुचाल. विससीलागतहैबुरीहसंसीधिसीकीलाल ॥४७॥ मुग्ध
 । मुदिता ॥चालीकीबातैचलीसुनतसरवीनकेवाल. गोयेरुलोयनहमजिजात
 कपोल ॥४८॥ नवलवाम ॥जोगजुगतिसिखइसयैमनोमहामुनिमैन
 तपियअद्वैतताकाननिसेवतनैन ॥४९॥ देवरजीता ॥कहतनदेवरकीकु
 जलतियकरुतउराई. पिंजरगतमंजारधिगलुकज्योसूखतताइ ॥५०॥ नव
 लवाम ॥अरतेटरतनचरयेदेइरुकरकमनुमैन. होठाहोठेवउचलेचि
 राईनैन ॥५१॥ नहियरागनहिमधुरमधुनहिविकासयहिकाल. असीकाल
 होसोवंधोआगेकोउहवाल ॥५२॥ ज्यो ज्योजोवनजेठदिनउचमितिअति
 बिकात. ज्यो ज्योछिनछिनछिकटिछयाछातपरतनितजात ॥५३॥ नवनागरि
 जुमुलुवालसिंहिजोवनअमिनजोर. घटिवटितेघटिवटिरुकरकमकुरीओरकी

और ॥ ५४ ॥ अयने अंग के जानि कै जोवन नृपति प्रवीन कुच मन न नान तव
 को बढोइ जाफा कीन ॥ ५५ ॥ लख ॥ दायउ जेरे रूपति हि हरत वसन रतिका
 जार होल पटि कुविका छाटि नेने को छु तेरे न लाज ॥ ५६ ॥ नखि दौरति धिय क
 र कटक वास छुटावन काज । वरुणी वन गाठे दगनी रहोगवौ करि लाज ॥ ५७ ॥
 सुग्धामान ॥ नोउ सुनत ही द्वै गयो तन औरै मन और । दवै न हो चित च
 ठिर हो । आवै च ठाये तौर ॥ ५८ ॥ लाल अलो लिकल रिक ईल धिल धिस घी सि
 हाति । आजु कालि मे देखियत उर उकसौ ही जानि ॥ ५९ ॥ देह डुरहि याकी
 चैठे जौ जौ जोवन जोति । तौ तौ लखि सौ ते सवै मलिन वदन डुति होति ॥ ६० ॥
 मान कु मुख देख रावनी डल हो के अनुराग । सा सु सदन मन ललन
 न दयो सुहाग ॥ ६१ ॥ नेऊ उतै उठि वै ठि स क हार हेग हिगेह । छुटी जात न हि
 दी छन क मेह दाला गन देह ॥ ६२ ॥ मध्या नायका ॥ लगी अनलगी सौ जौ वि
 धिकरी घरा कटि घीन । किरम नौ स ही कसरि कुच नितं व अति घीन ॥ ६३ ॥
 हसि वोठत बिच कर उचै किर निचो है नैन । घरे अरे धिय के पृथालगी विरी
 मुख देन ॥ ६४ ॥ जद पिनाहि नाही नैन वदन लगी जक जात । तद धि जौ ह
 हासी जरा हासी येठ हरात ॥ ६५ ॥ करी चाह सो चटक कै घरे उठौ है मेन ।
 लाजन बाधे तरफ ते करत भुसे नैन ॥ ६६ ॥ छुटै न राज न लाल चौ चो ल
 धि नै हरगेह । सठ पटात लोचन घरे नरे सकोच सनेह ॥ ६७ ॥ जौ जौ
 याव कल पट सी पिप हि य सोल पटति । तौ तौ फुहा गुलाव की छति या अ
 तिसि यराति ॥ ६८ ॥ ठीरी लाई सुनन की रिगोरी मुसकाति । घोरी घोरी सऊ
 च सो जौरी जौरी बात ॥ ६९ ॥ छोठाना यका ॥ सब अंग करी राखे सुघरि नाइ
 कनेह सिखाई । रस जुतरे त अनंत गति पुटरी यातुर राई ॥ ७० ॥ सकुचि सु
 रति आरंभ ही बिछुरी लाज ल जाई । दुह कि ठार दुरि ठिगन ईटी ठठि ठाई आ
 ई ॥ ७१ ॥ विरह सकेलाई बिलो कियत प्रोठि ति पार सधूमि । पुल किय सीन त पू
 त को धिय चूचौ मुह चूमि ॥ ७२ ॥ अगल जा ॥ आपु दयो मनिये रिलै यल दे दा
 हाया ठि । कोन चाल यह रावरी लाल लुकावत दी ठि ॥ ७३ ॥ प्रछन मान ॥ रि
 सकी सीत खस सिमुखी हसि हसि बोलत वैत । गूठ मान मे कौ डुरै नये चू
 ठ रंग मैत ॥ ७४ ॥ अठिताना यक ॥ यल नयी क अंजन अधर धरे महा उर जाल ।

आजु मिले सौच सी करी न ले धने हो लाल ॥ ७५ ॥ मुह मिठा सुद्रिग चाकने जो है सरल
सजाई। तउ बस्यौ आदर बस्यौ धित धिनहि यो सकारि ॥ ७६ ॥ तरुन को कनद व
रन वरन ये अरुन निशिता गिवाहिके अउरा गडिगर हे मनै अउरा गि ॥ ७७ ॥ लाल
नल हिया रुडै चौरा सौ हरै न। सी सचठे यन हा प्रगट क कहै पुकारे नैन ॥ ७८ ॥
तुरत सुरत कै से डरत मुरत नैनै नुरि दाहि। औरी उन रावरे कहै कनौ डीठा ॥ ७९ ॥
नखरो वासो है नई अल सो है सब गात। सो है होत नैनै नरु मसौ है कत यात ॥ ८० ॥
मरकत जाजन सलिलंगत इंडु कला के चेष। कीने पट मै फूल मल्यै स्याम गात नख
रे ॥ ८१ ॥ केसर के सरि कुसुम के लहे अंगल पटाई। लगे जानि नख अनखुली कत
बोलत अनखाई ॥ ८२ ॥ जोति बतुम मन जायती राखे हिरव साई। मोहि जु कावत
डिगन कै वह ईउ ऊ कत काई ॥ ८३ ॥ मोहि करत कत वावरी करे डराव डरै न। क
हे देतरंग रातिके रंग निचु अत से नैन ॥ ८४ ॥ जेहि नामिनि चूषन रचौ चलन महा
वर जाल। वहामनौ अधियार ही औ उन के उन लाल ॥ ८५ ॥ हक गांस औरै गेहे
रहे अधक हे वैन। देखि बि सौ है नैन पिय काये निचो है नैन ॥ ८६ ॥ पावक सेलो
चनल सै ० जाव कल्य गो जाल। मुकुर हो रुगे नेकु मै मुकुर बिलो कौ लाल ॥ ८७ ॥
तेहत रे रे रे तौर करि कत करियत डिगलोल। लाकन हाय हया क की श्रुति
मति जल रुपोल ॥ ८८ ॥ अनत वसे निसिका मिसनि उर वरि रही वसे धि। तउ
लजु आई कत वरे लजौ है देखि ॥ ८९ ॥ प्राण प्रिया ही मै वसे नखरे वास सिजा
ल। जलो देवाये। आनिय हरि हर रूप रसाल ॥ ९० ॥ फिरत तौ अटकत क बन
कर सिक सोरसन धिया ल। अनंत अनंत नित नित फिरत चित सै कुचत कत
लाल ॥ ९१ ॥ ह्यान चलै बलिरावरी चतुराई की चाल। सन बहिर धिन धिन न
टत अनख वतावत लाल ॥ ९२ ॥ गडी वडी छुवि छुकि छुकि गुनी कोर छुटे
नारही सुरग सुग सीव है नरुदी महु दी नैन ॥ ९३ ॥ वैसी ये जानी यरत क गाउ
जरे माह। मृग नै नील पटी जो हिय बनी उवठी वाह ॥ ९४ ॥ बाहा की चित चट पटी
धरत अट पटे याई। लपट बुनावत विरह की कयट जरे त्रु आइ ॥ ९५ ॥ क
त स कुचत निधर क फिरौ रति यौ धारित मै न। कहा करौ जे जाये लगे लगे है
नैन ॥ ९६ ॥ बोई गडिगाउँ यरो उवट यौ हारु हियेन। आनौ मौरि मतंग मन

मारिउलेरनमैन ॥२७॥ मेरे हरागेगरेलगी जोने तेहि ताई। सोई लै उरलाइ येला
 ललागियत पाई ॥२८॥ घट सोयो छि करी घरी घरी चयान कचे ब। नागनि कैला
 गी डगनि नागवेलि अगरे ॥२९॥ तकरुन उरुस वजग कहत कत विनु काजल
 जात। सो है की जैनै न जो साची सो है यात ॥३०॥ रहे चौकि चहु घाचितै चितमे
 रोमति नूनि। मूरउदै आस हरा डिगनि साक सी फूलि ॥३१॥ कहु विनु काज चला
 ईत चतुराई की चाल। कहे देत सवरावय विनुराने निरुन माल ॥३२॥ कत येटे
 यत मेगरे सोन जुही निस सैन। जिन चंय कवरणी किये गुलाजरंग नैन ॥३३॥ कत
 कहि छत दुख देन कोर चिपचिव धन अलीक सबै कहाउर मैल येला लमहा व
 रलीक ॥३४॥ आजुक छू औरै नये छरुन सठक टैन। विचित के हित के चुग
 ल रुनित के हो हित नैन ॥३५॥ बालक हाली लाज ईलोयन कोयन मारु। लाल ति
 हारी डगन की यारा डगनि मै छारु ॥३६॥ थादन सदन के फिरन की सदन छुटी ह
 रिराई। रुचै तितै विहरत फिरौ कत विहरत चित आई ॥३७॥ सखा कोल छन ॥
 कोरि जतन की जैत तुनागरि नेह दरे न के हे देत चित दी कनो नई रुखाई नैन।
 ॥३८॥ प्रवेशि प्रतिक ॥ पूस मास सुनि सखिन सो साँई चलत सवार। गहिक
 रवीन प्रवीन तिय रागोरा गसलार ॥३९॥ ललन चलन सुनिय लन मे अरु वा
 फूल के आई। जईल आई न सखिन ऊफूटे हुज मुहाई ॥४०॥ रहितै चंचल
 पान सै कहि कोन के अगोट ललन चलन की चित धरी कलन पलन की ओ
 ट ॥४१॥ बिलखी उज कौ हा चख नितिय लखि गौन वराई। पिय गरु व आये गरे
 राखी गरे लगाई ॥४२॥ अजौन आय सहजरग विरह दू वरे गात। अवही क
 हा चलाइ यललन चलन की वात ॥४३॥ ललन चलन सनि चुपर ही बोली आणु
 नई ठि। राखी गहि गाठे गरे मान गिलि गिला दी ठि ॥४४॥ वामा जामा का मिनी क
 हि वेले प्राणेश। टपारी कत तल जात तन याव स चलत विदेश ॥४५॥ आ
 ग छति सति ॥ मलिन देह वैश्वसन मलिन विरह के रूप ॥४६॥ यि अ आग
 म औरै वठी आनन आय अनूय ॥४७॥ सुगज आगम उत माह ॥ मृग नैनी ड
 ग की फरक उर उछाहत न फूल। विनही पिय आगम उगम यल टल लगी ड
 कूल ॥४८॥ रहे वरोठे मिलन हो यि प्रानन के ईश। आवत आवत की जई विधि

की घरे घराश ॥ १८ ॥ कहिय टई जिव भावती यिय आवन की बात । फूल
आगन मै फिरै आगन आगम सात ॥ १९ ॥ वामा वाहु फरकत मिलै जोधि
यजीवनि मूरि । हौतो ही सौ जोटि हौरा बिदाहिनी दूरि ॥ २० ॥ सखी वचन ॥
कियो सया नी सखिन सोनहि सियान चरमूल । डुरै डुराय फूल लौ कौ पि
य आगम फूल ॥ २१ ॥ आयो मीत विदेश सो काहु कह्यो पुकारि । सुनि फूल
सी बिलसी हसी दोउ डुकुन निहोरि हो ॥ २२ ॥ नाचि अचानक ही उठी बिउपा
वमाचन मोर । जानत हो नंदित कराय हृदिसि नन्द कि सोर ॥ २३ ॥ वासक
सज्या ॥ नमला ली चाली निसा चट काली धुनि केन । रति पारी आली अनत
आखन मालीन ॥ २४ ॥ जाति मरी बिछुरी छदी जरै सफर की रति । छि
न छिन होत बरी बरी यरी जराय ह प्रीति ॥ २५ ॥ स्वाधीन पतिक ॥ अपने
करि गुहि आ पुहा हिय पहिराई लाल । नौल सिरे औरै चढे मौल सिरी के मा
ल ॥ २६ ॥ कियो जो चिबुक उठाई कै कं पित कर जरतार । टिठी छे टिठी फिरै
टिठे तिल कलिलार ॥ २७ ॥ नाक मोरि नाह ककै रै बाहुनि होरे लेई । छुवत
बोठ बिय आंगुरिन विरी वदन यि रं देई ॥ २८ ॥ रहोगुही वेनी लखी गुहि वेके
तौ नार । लागे नीर बुवान जोनी ठि सुखाखवार ॥ २९ ॥ रूप मर्विता ॥ उसह सो
ति सलै सो हिय गनत न नात वि आह । धरे रूप गुण को गरव रे अछे रु उ
छाह ॥ ३० ॥ शायतनि ॥ सुरगम हावर सौ पतिग निरखर ही अनघाई ।
पि अंगुरिन लाली लखे बरी उठे लगलाई ॥ ३१ ॥ सरजातल छिता ॥ मो
सो मिन वत चातुरी तूहि जानत जेउ । कही दित यह प्रगत हा प्रगत यो पू
स प्र सेउ ॥ ३२ ॥ सही रगाले रति जगे जगी पगी सुख चैन । अल सो हे सौ हे
किये कहो हसो है नैन ॥ ३३ ॥ अन्य संजोग दुःखित ॥ मल्यो अवालौ बालि
यो आयै यठै बसाठि । दाठि चौराई डुकुन कील बिलखि चौरा दाठि ॥ ३४ ॥
बिल बिल बखरी बरी नरी अनख वै राम । मग नैना सैन न ज जैल बिल बनी
का दाग ॥ ३५ ॥ बिछुरे जाद कसो तियाग निरखत हि गहि गासु । सल जह सो
ही जानिली आधी हसी उसासु ॥ ३६ ॥ सुरतातल छिता ॥ यह वसंत घरि
ये अरी गरमन सीतल बात । कहि कौ फूल के देखियत पुलकिय सी जे गात ॥

सापत्ति का ॥ धिय प्रान न कीया हू करत न अति आपु । जाका दस हृद सा ह
 सौ सौ तिन रु संतापु ॥ ३८ ॥ निरखिन उठाना रितन छुट तल रि कई रे स । जो
 पारो प्रति मते यन मन रु चलत पर देश ॥ ३९ ॥ छला यरो सिनि हाथ ते छ
 ल करि लियो पिछा नि धिय हि दे आ यो लखि बिल खिरि स सूच क मु सु कानि ॥
 ४० ॥ हाठ हि तु करि प्रीत मलि कियो जो सौ ति सिंगार । अ य ने कर मो तिन गु ह्यौ
 ज्यो हर हर हार ॥ ४१ ॥ सुघर सौ ति व स धिय सु न ति दुल हि नि दु गु न कु ला
 स । ह सी स खी त न दी ठि करि स गर व साल त हा स ॥ ४२ ॥ मो ह त सं क स कु त न
 चि ज वोल त क ड वा क । दी न छ न दा छा कार ह त छु ट त न छ उ छ बि छा क ॥ ४३ ॥
 र हा प करि या टी स रि स च रि जो है चित वै न । लखि स प ने वि य आ न ल त ज ग त रु
 ल ग ति हि ये न ॥ ४४ ॥ जो सि ना ॥ जु व ति जो हि मै मि लि ग ई ने कु न पर त ल वा ई
 । सो धे की डो रे ल गी अ ली च ले स ग ल र्द ॥ ४५ ॥ मो य अ था इ न ते उ छे गोर ज छ ये
 गै ल । च लि व लि अ लि अ चि सार के च री स कौ धे सै ल ॥ ४६ ॥ रु ह्य अ चि सारि का ॥
 नि सि अ धि आ री नाल प ट प हि रि च रे धिय गे ह । क हो ड र यि कौ ड रै दी प सि
 वा सी दे ह ॥ ४७ ॥ उ ठि ये टौ ठ क ठ क क हा या व स के अ नि सार । जा नि य रै गा दे
 धियो धा म नि घ न अ धि आ र ॥ ४८ ॥ य ति र ति का व ति पा क ही स खी ल खी मु सु का
 ई । कै कै स वै ट ला ट ली अ ली च ली सु र व पा ई ॥ ४९ ॥ दं प ती जो रु अ चि सार ॥ मि
 लि पर छा ही जो रु सो र हे ड ह न के गा त । ह रि रा धा रु क सं ग हा च ली ग ली मो जा
 त ॥ ५० ॥ मि स ही मि स आ त प ड स ह र्द स वै व ह ठा ई । च ले ल ल न ले जा व ती त
 न की छा ह छ पा ई ॥ ५१ ॥ अ री च री स ट प ट य री वि धु आ दे म ग हि रि । मं ग ल रु म
 धु प न ल सै जा ग न ल गे अ धे रि ॥ ५२ ॥ छ यौ छ पा क र छि ति छ यो त म स चारि ।
 ह स त ह स त च लि स सि मु र बी मु र व से अ च ल टारि ॥ ५३ ॥ पू र व प्रे म ॥ सो व त
 जा ग त स्व प न व स र स नि र सै चै न डु चै न । सु र ति स्या म घ न की स र ति वि स रे
 रु वि स रै न ॥ ५४ ॥ धिय के ध्या न ग हा ग हा र हा व हा कै नारि । आ पु आ पु हा आ
 र सी ल धि री कु ति रि क्क वारि ॥ ५५ ॥ मो ह ॥ र हा अ च ल सी कै म नौ लि आ चि त्र
 की आ हि । त जे ला ज स व रोग का क हो विलो क त का हि ॥ ५६ ॥ की डू डू को रि ज
 त न स वै अ व ग हि का ठै को न । मो म न मो ह न रूप मि लि या नी मो को लौ न ॥ ५७ ॥

मोहिदयो मेरो न चोर ह त जे मिलि जिय साथ । सो मन बाधिन सो धिये धिय
सौतिन के हाथ ॥ ५२ ॥ प्रोषित यातिका ॥ औरै जाति न ये बये चो सर चन्दन चन्द
। यति विनु अति पारति विपति मारति मारुत मन्द ॥ ५३ ॥ धिय विचुर न को दुस
ह दुख हर प्रजात यो सार । नुर जौ दन लौ देखि यत त जे प्रानय हि वार ॥ ५४ ॥
पर कीया नार्क ॥ कहत न दतरी ऊत मी ऊत मिलत मिलत तल पटात । जै रज
वन मे करत है नैन न हो सो बात ॥ ५५ ॥ त्रिबली ना भिदे आई कै सिरुठ कि सकुचि
समाहि । अली गली की वोढ कै चली मली विधि चाहि ॥ ५६ ॥ कारे वर न उरावने
कत आवत रहिगे ह कै बाल श्री सरबाल खीर गै घर घर देह ॥ ५७ ॥ गदराने
तन गौरती औ पन आउलिलार । ऊत यो दे इटला दुग करि गवारि सुकुमार ॥ ५८ ॥
डिगत डिगत सी चलि ठिठु किचित ई चली निहारि लय जात चित चौर टीव हा गो
रती नारि ॥ ५९ ॥ लघिलो ने लोयन न कौ को धन होइ आजु । कौन गरीबने वा
जिबो कित तू ठोरति राजु ॥ ६० ॥ ऊंज नवन तजि नवन को चलिये नंदि किशो
र । फूलत कली गुलाब की चट काहुत बऊ चौर ॥ ६१ ॥ फूट का चटत उत्तरत
अटाने कनथा के देह । नई फिरति नट की बटा अर को नागरनेह ॥ ६२ ॥ गुर
जननी ता नायका ॥ नई लगनि कुल की सकुच विकुल नई अकुलाई । उऊ वोर
औ चाफिरै फिर कालौ दिन जाई ॥ ६३ ॥ फिरि फिरि बूझत कहि कहा कह्यो साव
रेगात । कहा करे त देखे कहा अली बली कौ बात ॥ ६४ ॥ अनुसय नानाई का ॥
मनस खोवा तौ वनौ भुखौल इउ अरि । हरी हरी अर हरि अजौ धर हरि धरि
जिय नारि ॥ ६५ ॥ सुनियग भुनिचित ई इतै दूत दये हा दाठि । चकि जु कास कु
चाउरी हसेल जौ हा दाठि ॥ ६६ ॥ कामदसा ॥ जौ हउ चै आचरु त्रुलटि मौर
मौरि मुह मोहै रि । नाठि नाठि जातर गई दाठि दाठि सो जौरि ॥ ६७ ॥ देखो अ
न देखो कियो अंग अंग सबै देखे आई । औठा सी चित वनिचितै वैठा आपुल जा
ई ॥ ६८ ॥ औ चत सी चित वनिचितै नई वीत अलसाई । फिरि डक कनिको मृ
गत यनै इगने लगनिया लाई ॥ ६९ ॥ उचे चितै सराहि कहि गिरहि कबूत
रलेत । फूल कित इग सुकुलित बदन तन पुलकित केहि हेत ॥ ७० ॥ ना
सामोरिन चाई इग करी क का का सौह । काटो सी क सकत हिये गडा कटे

लीजौ ह ॥ १७८ ॥ नब जौवना ॥ चलत घेरु घरत उघरी न घर रुहराई ॥ उक
 सो है सो है हि ये दई सवै उक साई ॥ १७९ ॥ जा कवि दग्धा ॥ रह्यो मोह मिलि वो
 रहे यौ कहि गही मरोर ॥ उत दै सधिहि उराहने इत चित्त ई मोवोर ॥ १८० ॥ भ
 य जठात्रु ने हित जिवा दिव कति वेकाज ॥ अलि अब देत उराहने उर आवति अ
 तिलाज ॥ १८१ ॥ देहु लखै ठिगगे हयति तउ नेह निरवाहि ॥ नाचेये अभि इन इतै
 गई कन धिय न चाहि ॥ १८२ ॥ यह वलितो होमेल खी प्रगति अपूरव वार ॥ लहि
 प्रसाद माला प्रजोत न कदंब के माल ॥ १८३ ॥ उत उर को चित्त चौर सो इत गुरज
 न कीलाज ॥ चठेहि डोरे से हिर के खनै यह काज ॥ १८४ ॥ जौ जौ आवत निकट
 निसि तौ तौ घरी उडताल ॥ रुम किक मकिट हलै करै रगेर होल रुचटे वाल ॥
 १८५ ॥ वडा कुटुंम की नीर मेर हे वै ठि दै पीचि ॥ तउ पलक पजात इत सलज रु
 सौ हादा ठि ॥ १८६ ॥ मै नलगे ते हिल गनि छुटै न छुटे रूपान ॥ कामन आवत ये
 कहु तेरे सौ कुसयान ॥ १८७ ॥ और सवै हर खत हसत गावत चरी उछाह ॥ तु
 हावहु विलखी फिरै कौ देवर के बाह ॥ १८८ ॥ दूके कौ रूखी परतिस गिव गि
 रहे सनेह ॥ मन मोहन रस प्रगट हे कहै देत रुब देह ॥ १८९ ॥ मेरे बूझत वा
 त कत हव हिरावत वाल ॥ जग जानी विपरीति रतिले खिदली पिघवाल ॥ १९० ॥
 नटनिसी ससावित प्रई लुटा सुवन की मोट ॥ चुपन करै नारा करत सारी प
 रास लोट ॥ १९१ ॥ मैल पिनारी ज्ञान कै राखी निरधर यह है ॥ वह ई रोग निदान
 बहै दै ववो यदि वह है ॥ १९२ ॥ समर समर सकोच वस विवसन ठि कह राई ॥ फि
 रि फिरि उकै कफिर डुरति डुरि डुरि उकति आई ॥ १९३ ॥ सट पटात सीस सि
 मुखी मुरब घूघट यट ठांकि ॥ पाव कजर सी रुम किकै गई औच का जाकि ॥
 १९४ ॥ तरिकालो वेके मिस निरंगर मो ठिग आई ॥ गया अचानक आगुरी छाती
 कैल छु आई ॥ १९५ ॥ परति पदोष पुरान सुनि पुरकि हसी सुख दानि ॥ कसु करि
 राखी मि अहु मुह आई मुसु कानि ॥ १९६ ॥ चित पिनु मान जोग गनि जये जये सु
 त सो ग ॥ फिरि कै फूल से जोई सीस मुजे जार ज जोग ॥ १९७ ॥ नौ हत्र सत मुहन
 टत सी आधिन सोल पटात ॥ औचि छदावत कइतै आगे आवत जात ॥ १९८ ॥ दे
 वर फूल हने जो सो उठे हर वि अग फूलि ॥ हसी करत वोषद सखी देह देह रन नूति ॥

प्रमत्त सक्त नायका ॥ यहु चट उठिल न सुनट लौरो कसकै कोउ नाहिला धन रुका
 भार मो आधि उहे चल जाई ॥ २०० ॥ कृपचिदग्धाना यका ॥ नहिन हाइन जाई घराचि
 तचिहु तोत कितीर । यरसि फुरहले रे फिरत बेहसत धसत न नीर ॥ २०१ ॥ अस्त्रान ॥
 मुह पधारि मुउ हरजि जै सीस सजल कर छाई । मोर उचै घूटे न लौनारि सरोवर
 हाई ॥ २०२ ॥ मज्जन करि यंजन नयन बैठी बौरति चार । कच अंगुरि न विचठी ठिदै चि
 तवंत नन्द कुमार ॥ २०३ ॥ फेरु कछु कर पचरिते फिर चित ई मुसुकाई । आई जाव नु
 लेन जिघने है चली जमाई ॥ २०४ ॥ हने धिन बोलत लखिल लन निरखि अमिल संग साथ ।
 आधिन ही मेह सिद्धो सीसहि ये धरि हाथ ॥ २०५ ॥ जुकि जुकि रूप कौ ही चलनि फिरि
 फिरि मुरि मुसुकाई । तिय पिय आगमनी दमिस दै सब सखी उठाई ॥ २०६ ॥ झाइ
 यहि रिप दुउटि कियो वेदा मिस घर नाम । डिग चलाई घर को चली बिदा कै ये
 घन श्याम ॥ २०७ ॥ चित ई लल चौ हाच धनि उरि घूघट पट माह । कूल सो गई छुआ
 ई कै किन कुछ वीली छाह ॥ २०८ ॥ मह देव तरु उघसत अनंग वतीर । धसत न
 ईदा वरन यन कालि दे कानीर ॥ २०९ ॥ यहि काते सो पाई गडिलि ह्रीमल तजियाई ।
 प्रतिजना वत मीत सो मीत जौ कट्यै आई ॥ २१० ॥ सकुचि सर कि पिय निकट ते
 मुरकि कछूट न तोरि । कर आचर की बोट दै जमुहानी मुह मोरि ॥ २११ ॥ अनुसया
 नाना इका ॥ फिरि फिरि बिलखी कैलन बैनरि चरिले तउ सास । साई सिर कच सेत
 ज्यौ वितै चुनत कयास ॥ २१२ ॥ दक्षिण घिय होवाम वस विसराई तिय आन । ये कै वा
 सर के विरह लागे वर घबहान ॥ २१३ ॥ तिय ति धित रुण कि शोर वै पुन्य काल सम दे
 न काहु पुन्य न पाइए वै संधि संजोन ॥ २१४ ॥ छुटान सि सुता का फुल क फुल कौ
 जौवन अंग । दीपति देह दुहुन मिलि जयो ताप तारंग ॥ २१५ ॥ रूप सुधा सब जग कौ
 आस वधि अत वनेन । ग्याले बाठ प्रयावदन रह्यौ लगये नैन ॥ २१६ ॥ हसि हसि हे
 रतन चल तिय मद के मदं उमात । बल किवल कि बोलत वचन लल किल ल किल
 परात ॥ २१७ ॥ मिलि चन्दन वेदार हा गौरे मुहन घाई । ज्यौ ज्यौ मदला ली तौ तौ उध
 रत जाई ॥ २१८ ॥ नियटन जोरीर बल तिय वह कि वारुनी सै ३ । तौ तौ अति मीठी लगे
 ज्यौ ज्यौ ठाठो देइ ॥ २१९ ॥ बलिन वचन अध धुलित डिगल लिखे दकति जोत । अरु न
 बदन छवि मदन की यदी छे वेली लोत ॥ २२० ॥ माउत मो सो करीर ही विवस वारुनी

सई। छन कह सतहसिहसिजुकतजुकिकिहसिहसिदेई ॥२१॥ यकुलाहार
 हियेलसैसनकीवेदाजाल। रावतवेतखरावरीवरेउरोजवाल ॥२२॥ जौकर
 तौचिऊदीचलैजौचिऊदीतौवरि। छविकागतिसीलैचलीचातुरकातनहार
 ॥२३॥ वरुधनलैयेहसनकैपारोदेतसराहि। वैदवधूहसिजेदसोरहीनाह
 सुयचाहि ॥२४॥ सुरतिउरायेनादुरतिप्रगठकरितरिरूप। छटेयीकऔरैउ
 ठीलालीबोयअनूप ॥२५॥ रंगीसरतिरंगपिंगहियेलगीजगासवरति। पैउये
 उयरठेजुकईऔजजराऔजाति ॥२६॥ यटकेठिगकतठांयअतसोमितसु
 जगसुवेध। हदरदछदछविदेहयहसदरदछदकरिष ॥२७॥ छिनकउ
 धारतछिअतरावतछनकछयाई। सबदिनययअंजितअंधरदरपनदेवत
 जाई ॥२८॥ लाजगरवअलसउगगजेरैनैनमुसकात। रातिरमारतिदेतकहि
 औरैप्रनैप्रजात ॥२९॥ डिगधिरकहअधवलेदेहधकेहेचार। सुरतिसाव
 सेदेधयेउअयतिउधिगर्भकेचार ॥३०॥ लहिरतिसुबलहियेलहीलजौही
 ईठ। बुलतनमोमवधिवहेअर्थबुलीदीठ ॥३१॥ उरुहरकीहसिकेटकेतै
 इरुसोयीमुसुकाई। नैनमिलतमनुमिलगयोदोउमिलचतगाई ॥३२॥ गली
 अधारोसीकरीमोअटजेरोआनि। यरेविछापपरस्परदोउपरसिधिछानि ॥३३॥
 लटकिलटकिलटकतचलतमुकुटकाछाह। चटकप्रयोनतमिलगयोअटअ
 टकवनमहं ॥३४॥ करउठाईधूधटकरतउसरतयटगुजरोठ। सुखमोटैलू
 टीललनललनलखिलालनाकीलूठ ॥३५॥ दीठवरतवधीअरनचठिधाव
 तनजरात। इतउततेंचितउहननटलैआवतजात ॥३६॥ उहनमिलेकेडगफ
 मकरुकेनजनेचोर। हलकीकैजहरोलकीपरतगोलयरमेर ॥३७॥ धरौख
 रीसमीयलैलेतमनिमनमोद। होतउहनकाडगनकावतरसहसीविनोद ॥३८॥
 येतीजारहजेदकैकितरुछइतआई। फिरैदाठितरिदाठिसोसबकेदीठबवा
 ई ॥३९॥ मित्रमिलापमहिमा ॥ जौनजुगतिधियमिलनकापूरिमुकुटिमोहदीम।
 जौलहियेठिसंगसजनकोधरकनरकरुकार ॥४०॥ दर्पणकरमुदरीकिआर
 सोप्रतिबिंबदेआई। योधियेनिधरकलबैयेकटकदीठलगआई ॥४१॥ सपन
 दरसन ॥ सोवतसपनेश्यामघरहिलिमिलि। हरतवियोग। तवद्वाटरिकिक

२०
 १५
 ०
 ७
 ० 5 10 15

दूगईनादैनानदनजोग ॥ ४२ ॥ मित्रदर्शन ॥ उचितचितनहलतवलतहसत
 जुकटविचारि। लिखितचितचित्रधियलधिचितैरहाचित्रलोरारि ॥ ४३ ॥ हिंडोला
 मिसितिलाप ॥ हेरिहेउरेगगनतेयरेपरोसेइठि। धाईधराधियबीचहांकराव
 रारसलठि ॥ ४४ ॥ विछुरेजियेसंकोयवसबोलंतवनैनवैन। दोउदौरिगरेल
 गेकियनिचौंहेनैन ॥ ४५ ॥ हिंडरा ॥ वरजेदूरोहविवठैनासकुपैनडिराई। टठ
 तिकठजोमचिमचिकलचकिलचकिवचजाई ॥ ४६ ॥ वचनछेाम ॥ दोउचाहज
 रेकछूचाहतकहोकोहैन। नहिजायकसुनिसूमलौबाहेरनिकसतवैन ॥ ४७ ॥
 जदधिचवाईचाकनीचलतचरुदिसैन। तदधिनछेउतडहनकेहसीरसीलीनै
 न ॥ ४८ ॥ नितप्रतियेकतहारहतवैसवरनयक। चहिअतिजुगलकिसेरलधि
 लोचनलोचनजुगलअनेक ॥ ४९ ॥ राधाहरिहरिराधिकावनिआयेसंकेतदंय
 तिरतिवियरातिसुरवसहजसुलतहालेत ॥ ५० ॥ दोउअधिकईजेरयेकैगोग
 हराई। कौनमनावैकौमनैयेकैठिकउहराई ॥ ५१ ॥ रवनकरहयोहविरवनिसे
 रतिवियरातकिलास। चितैकरैलोचनसतरसलजसरोजसहास ॥ ५२ ॥ विन
 तारतिवियरातिकाकरियरसिपिइयाई। हसिअनबोलेहारहाउत्तरदियोवता
 ई ॥ ५३ ॥ यरोजोरनिवियरातरतिरूयौसुरतिमतिधीर। करकुलाहलकेंकिनागह्यो
 मौनमजीर ॥ ५४ ॥ नाइकमोहनशक्तिः ॥ मोहाकोटिमानगोदेअतहावजराज। रहा
 गरीलौमानसीमानुकियोकाराज ॥ ५५ ॥ नहिनवाईचित्तदगननहिबोलतमुसुका
 ई। ज्यौज्योरूखोचितकरैतौतौहीचिकनाई ॥ ५६ ॥ मोहिलाजावतनिलजहेंयेहुल
 मिमनेसवगात। जानउदैकाबोसलौमानुनजानोजात ॥ ५७ ॥ जौलौलघौनकुल
 कथाठकुतौलौठहरात। देखआवतदेखिहाकेहूरहनजात ॥ ५८ ॥ सतरजौंहरु
 रूखेवचनकरतकविनमननाठि। कहाकरौहैजातहरिहेरिहसौहादाठि ॥
 ५९ ॥ उडुकहतडुआउरूसमुजतसवैसियान। लधिमोहनजोमनरहौतौम
 नराघौमान ॥ ६० ॥ उहेनिगोडेनैनगीगेहेनचेतअचेत। होचसिकैरसिकेकरौये
 निशिकेहरिदेत ॥ ६१ ॥ रातिदवसहोंसरैहैंमानुनछिउठह। जेतऔरठठिचा
 उणोहाथयरजाई ॥ ६२ ॥ सवीवैत ॥ विचेमानअयरोधाहूचलिगेवठेअचैन। जु

रत दोठि जिरिस धिसिर से उह नैन ॥ ६३ ॥ चिरूयो मिसरो वध कहत रहे चैन ॥ रूख कैसा
 होइ ये निहचे करी नैन ॥ ६४ ॥ मुहु उधरिय धिल धिर रुतर हेत गो मिसि सैन ॥ फरका आ
 ठ उठे पुलकि गये उधरि जुग नैन ॥ ६५ ॥ दंपति उचित महिमा ॥ चिरंजीव जो रीजुरै कौन
 सनेह गंजार ॥ को गटिये वृष जान जावै हर धर का वीर ॥ ६६ ॥ उन्माद दशा ॥ वह का सब जी
 के कहत ठौर ऊठै रान बैठ ॥ किन औरै किन और सी सख बिछा के नैन ॥ ६७ ॥ उदवेग द
 सा ॥ इत ते उत दित ते ईतै किन न कहू ठहराई ॥ कलन परत चकई न रफिरि आवत फि
 रिजाई ॥ ६८ ॥ साते का दोते इह नैनै को धरत न धीर ॥ नि सुदिन ठाठा सी फिरति वावा ठागा
 ठा धीर ॥ ६९ ॥ तंत्री नाद कवितर ससर सरागर तिरंग ॥ अन बूडे बूडे तिरे जे बूडे सब अंग
 ग ॥ ७० ॥ कैवा आवत यहि गलीर हो चलाई चलै न ॥ दरस का साधै रहै सूधे हो हिन नैन ॥
 ७१ ॥ रुस का दक्षिण दसा ॥ गोधिन संगति सिसर दकार मितर सिकर सरास ॥ सलहा के
 ह अति गतिन का सब नलखे सब पास ॥ ७२ ॥ काम चेष्टा ॥ लखिल बिअधि अन अधुधु
 लिन अंग मोरि अंगराई ॥ अधिक उठाल पटतिल बके औ उजर औ उआई ॥ ७३ ॥ वैठा ठैठ
 मदात उत जल न बजै बउवा गि ॥ जाहा सोला गोहियो ताहा के उर लागि ॥ ७४ ॥ स्यन चे
 ष्टा ॥ सोवत मनुल बिमनु मानु धरि ठिग सोयो पिव आई ॥ रही स्वयन का मिलि मिलि पि
 य सोल पटाई ॥ ७५ ॥ य सो जो सोर सो हा गको इरु बिनु हा पिय नेह ॥ ७६ ॥ डग मिह चत
 मृग लोचनी धस्यो उलटि जुज माथ ॥ जानि गई तिय नाथ के हाथ पर सहा हाथ ॥ ७७ ॥
 पीतम डग मिह चत प्रिया या निपर स सुख पाई ॥ जानि पछानि अजान लौने कन होत ज
 नाई ॥ ७८ ॥ दोउ चौर औ मिह चनी बेलन बेलिन अघात ॥ उरत हि ये लपटाई कै दरत
 हिल लपटाई ॥ ७९ ॥ कहिल हि कौन सकौ डरा सो न जुहा मेजाई ॥ जन का सहज सुवा
 सता देती जो न बताई ॥ ८० ॥ देखौ जागत वैसियै सांमर लगा कपाट ॥ कित कै आवत जा
 त जि को जानै के हि बाट ॥ ८१ ॥ जज कलि ॥ छिर के नाहन बोट दर के पिच का जल जोर ॥
 रोचन रग लाली नई पियति यलोचन कोर ॥ ८२ ॥ लचुन की चलि जात जी जलिके लिअ
 धीर ॥ केजत के सरि नीर मयति ततित के सरि नीर ॥ ८३ ॥ दियो जो पियल बिचलन
 मे बेलत का उन धियाल ॥ बाटत हू अति पीर मुख का ठवैन गुलाल ॥ ८४ ॥ पीठ द
 ये ही नेक मुरि कर धूध टप टपारि ॥ जरि गुलाल की मूठि सो मारि ॥ ८५ ॥ कुटत मूठि
 सगही कुटी लो कला ज कुल चाल ॥ लगे डुहन डुहन ये कवार हा चल चित नैन गलाल ॥ ८६ ॥

ज्यों ज्यों जु कि जु कि जिय दुवदन विरहसि सतराई। त्यों त्यों गुलाल मुटी ज्वे जु जु
 कावत यौ जाई ॥५०॥ चौरहरन ॥ रवि वंदौ कर जो रिये सुनत स्याम के बैन। ज्येह
 सोहे सवन के अति अनखौ हे नैन ॥५१॥ हास्य रस ॥ मन मै नेणा वन को करै देत
 रुठाई रुठाई। कोठ कला गोपिय पियारि जु खिजवत जाई ॥५२॥ मिसिहा सौ यौ
 जनानि स्ये पिय मुख चूबो डिगवाई। हस्यो बिसानी गलगहो गहा गले लपटाई ॥५३॥
 वतरस लाल चलाल का मुरली घरी लुकाई। सोह करै जोहन हसै देन कहै नट जा
 ई ॥५४॥ पियतिय सोहसि कै कलौ लखे दिठौ नदीहू। चन्द मुखी मुख चन्द ते मलौ
 चन्द सम काहू ॥५५॥ नामक मोरि सीवा करै जतौ छ काल कैल। फिरि फिरि चूलव
 है गहै यौ करा गेल ॥५६॥ देखन कछु कौतक इतौ तौ देखौ ने कुनिहार। कवके
 येकत ----- ॥५७॥ देखत बुरी पूरलौ उवै जाई जरिलाल।
 छिन छिन जात घरी घरी छीन छवाली बाल ॥५८॥ सांतरस ॥ ठरे ठार ते हाठरत उ
 जाठार ठरेण। केहू आन आन सी नैना लागत नैन ॥५९॥ चित दै देखु चकोर ज्योती
 जैन जैन नूख ॥ चिरगी चुनै अगार का चुगै चन्द मई ॥६०॥ रहठ कर रस ॥ यौ दति
 मलियत निरदई कुसुम सेगात। कर धरि देखौ घर घराउर कौ आजौ जात ॥६१॥
 बाररस ॥ अनी बदेउ मडाल ये असि बाहु कचट नूप। मंगल कर मान्यो हिये जो सु
 ख मल रूप ॥६२॥ विजमहाव ॥ उदी गुडाल बिलाल की अंगना अंगन माहा। बौ
 रालौ दौरी छु अत छवेली छाह ॥६३॥ रहा देहं डीठिग घरी नरी मधन या वारि फे
 रत कर उलटी रईन बिलो बहारि ॥६४॥ ललित हाव ॥ झुझुटी मटक निधी पट चट
 कल पेटी चाल। चल चवचित वनि चौर बिलियो विहारी लाल ॥६५॥ बो घकहाउ ॥ ल
 धि गुरजन विवक मसों के चुआ बो स्याम। हरिसन मुख करितार सी हिये लगई
 वाम ॥६६॥ सहित सनेह सके सुख स्वेद कंय मुसु कानि। प्रनायानि करि अपने पा
 ण घबे मोयानि ॥६७॥ जाल जवारे सौ निके सुनि घर नानि विहार। जोरस आनरस
 रसली रोख्यो ज्ये कवार ॥६८॥ कुटमिता ॥ कइ छिगुनी यहु चोगिलत अति दानता
 देखाई। वलिवा वन को बोति सुनि को बल इकै पत्ताई ॥६९॥ छिन कुचल निठिठ कटि
 छिन कुनु जप्रात मगिय डारि। बढी देखत घटा बिजु छटामी नारि ॥७०॥ रहि मुख फेरि

किये रहित स मुहे चित्त नारि। दृष्टि पर स उठि या का पुलक है पुकारि ॥ १० ॥ रस वा
 स ॥ हम हारी कै कै ह हाया घेण या सो पौरु। लेहिक हा अजरू किये ते ह तरे रो पौरु ॥
 ११ ॥ सकत न ता ते वचन तु अमार स कोर स धोई। धिन धिन औ टै धार लौ धरो स वा
 दिल होई ॥ १२ ॥ ना ठि ना ठि उठि बैठि हूं प्यो प्यारी पर जात। होउ नीद न रे धरा गरे ला
 गिर जात ॥ १३ ॥ पाती ॥ रग राते रा ते हि ये प्रीत म लिखी वनाई। पाती काती विरह का क्
 ती लई लगाई ॥ १४ ॥ कर लै चु विच ठाई सिर उर लगई जु ज मेति। ल हि या ती पिय की
 लिखी वां च त घर त स मेत ॥ १५ ॥ तर ज सी उ पर गी रो क ल ज ल छिर काई। पिय पाती
 बिनु हा लिखी वा चा विरह बलाई ॥ १६ ॥ विरह विकल बिनु हा लिखी पाती दई पठाई।
 अक विदु नी यौ सुचित सूने वा च त जाई ॥ १७ ॥ वसे तरितु वर्णन ॥ दि सि दिसि कु म जि
 त देखे ये उपवन विपि समाज। मन रु विघो गिन को कियो सर पिंजर रतुराज ॥ १८ ॥
 छ कि सौं रण सब म धु ध म धुर मा धुरी गंध। ठौर ठौर कोरत रु य त जै र जै र म धु अ
 ध ॥ १९ ॥ र नित मिंग घटावली कें गर धानु म धु नीर। मंद मंद आवत चलो कुंज ल
 क्त समार ॥ २० ॥ रही रुका के रु सो चलि अधिक रात विहारि। हरत ताप सब देव स
 के उर लगिय रि व पारि ॥ २१ ॥ सुवत स्वद मंद तरु त रुत न बेला पाई। आवत दक्षि न
 ते बलो थ को वटो हा वाई ॥ २२ ॥ लपटे पुह्य राग पट स नी स्वद म करे द। आवत नारी
 न वोठ लौ सुख द वाई गति मंद ॥ २३ ॥ नयो य ह औ सोई स मौ ज ह त हा सुख देत। चैत
 चन्द की चोद डारत करी अचेत ॥ २४ ॥ ग्रीष्म रि तु वर्णन ॥ ना हि न हे या व क प्रवल लु
 रो चलै च रु पास। मान रु बीर वसे त के ग्री र थ ले त उ मास ॥ २५ ॥ सीरी जने ते नि सि
 सिर तु सहि विरहि नित तु ताप। वसि वे को ग्रीष्म दिनि न य रो य रो सि पाप ॥ २६ ॥ कह
 लाने ये क तर ह त अ हि म ग वा घ। जगत त पो व न सो कियो दा घ दा घ ॥ २७ ॥ विष म
 घा दित की त्रि धार हा स वै जग सो धि। मरु ध र याई मति र हू म रू कह त पो धि ॥ २८ ॥
 पा से द हर जेठ की जिये मती र रु सो धि। अमित अपार अ गा धि जल मा रो उं मू प यो
 धि ॥ २९ ॥ पाव सरितु वर्णन ॥ पाव स घन अधि आर मी हर नो जे द न हि आन। राति
 देव स नानी प री ल धि व क ई च क वान ॥ ३० ॥ धुर चा हो हि न अल उ ठै धु आ ध रानि
 च कु मो द। जारत आवत जगत को पार प्रथम पियो द ॥ ३१ ॥ हठ न हठि ली करि स कै

यह पावें सरितु याई। आनगाठि ज्यौ घुटत यौ मानगाधि कुटिजाई ॥३१॥ कुटगकोयता
जिरंगरली करत जुबति जग जोई। पावस मूठ एवात यह दूठन दुरंग होई ॥३२॥ विर
ह जरी लखि जीगन निकहि कह्यो कै वार। अहै आउ प्रजि जानरा वर सत आन अगार ॥
॥३३॥ वेई चिरजीबी अमरनि धरक पिरौ कह्यो। छिन विहुरत जिहू केन हायावस आ
पसिराई ॥३४॥ अत जिनाउ पाई औ कोयो आवण मास। मेलन रेह बोधे मसो कुसुमे
केम की वास ॥३५॥ पावक जरसें महजर दाह के उस हविसे म। देहै देहवा के परसम
हि उगन हो देखि ॥३६॥ कवन सुनै का सो कहा सुर निविसारी नाहि। वदावदि जिय लेत
है ये वदरा वदरा हि ॥३७॥ विगसत नव वली कुसुमनि फट परमल बाई। परसि प्रजार
ज विरह हि वरसर को हेवाई ॥३८॥ तिय तर सौ है मन किये किर सर सो हे नेह। धर पर
सौ है कै रहै जर वर सो हे मेह ॥३९॥ सर दरितु वर्णन ॥ अहन सरोरुह करचन डिग घंज
न मुह चंद। समै आहि सु दरसर द काहे न करत अनंद ॥४०॥ चन के रो कुटिगा हर प्रच
ली चहु दिशि राह। कपो सुचै नो जगत सव सरद सूरन रनाह ॥४१॥ हे मंतरितु वर्णन ॥
ज्यौ ज्यौ वठै विजावरा त्यौ त्यौ वठै अनंत। वो कं ओ के सव लोक सुख को कहे मंत ॥४२॥ कि
यौ सकल जग काम वस जीने जाते अजेय। कुसुम सरहि सरुधनु कर अगहन हानन दे
ह ॥४३॥ मिलि विहरति मरदं पतं अनिरसाल नूतन विधि हे मंतरितु जगत जुरा फा
काण ॥४४॥ आवत जात न जा निये ते जहि ता जी सरान। घरहि जमाई लौघ घोघ रोय सा
दिन मान ॥४५॥ शिशिर रितु वर्णन ॥ तयन ते जनयता यतय अतुल पलाई माह। शिशर
सीत नाही नट रत विउलयते तिय नाह ॥४६॥ राहिन सकास वजगत मे शिशिर सीत का
त्रास गर्म जा जिगठ सवै नई तिय कुच अचल मवास ॥४७॥ लखत सुजग सीतल करि नि
न सुदेन अवगाहि। माह समी भ्रम सूर तौर हत चकोरी चाहि ॥४८॥ इन्द्र कोय ॥ लोये को
ये इन्द्र लै रोये पूलय अकाल। गिरिधारी राखे सवै गो गोये गोयाल ॥४९॥ प्रलय करन व
रखन लगे मिलि जल धरये कसाथ। सरपति गर्व हस्यो हरधि गिरिधरि गिरिधरि हाथ ॥
॥५०॥ डिगत या निडि गुलाति गिरिरलीख सव सव वजवे हाल। कंप कि सोरी की दरस अ
रल जाये लबाल ॥५१॥ डिग उर जरत दूट कदु वजुर तचतुर हि ये प्रीत। परत गाठि दर
जन हि ये दंयन इहराति ॥५२॥ उरत नट रै नीदन परै न काल विया कु। छिन कहु की उ
॥५३॥ कूकै न फिरि यरो विषर महु विह्याँ नेहन नैन को कुछ उय जीव दाखलाई। नार नरे दि

निप्रतिरहेतईनपासबुझाई॥५॥ साजेमोहनमोहोकोमोहाकियोकुचैन। कहु
 करोउलटेपरेयेनेलेनेनैन॥५॥ मैजानीइरुलोशनननुरतवाठिहैजाति। को
 हेजानतदीठिकोहाठिकरिकिराहोत॥५॥ मैतोसोकैवाकल्योतूजनिइरुघत्पा
 ई। लगालंकोंगीकरिलोपननउरतिमिलाईलाई॥५॥ सोरुसीतजिमोहद्विग
 लागिचलेबहिगौल। छनकाछुद्विगुरउरीछलीछवीलेछैल॥५॥ वणतन
 कोनिकसतलसहतइतआई। द्विगभंजनगहिलेगयोचितबनिचेपुलगाई॥५॥
 फिरिफिरिचितउतरहतडुटीलजकीलाउ। अंगअंगछविचौरमेजयोचौरकीना
 उ॥६॥ लोचलगेहरियूयकेकरीसाठिजुरिजाई। होईनवाचीवीचहिलोयनबु
 रावलाई॥६॥ खलुवउईबलुथकेकठैनकुवतकुठार। आलवालउरफालरा
 बरेयेमतठार॥६॥ उरुकोहितउरुवठैकोउकरैअनेक। फिरतकागगोलक
 मयोदिकुदेहचिपरक॥६॥ सुभरचतवगुननयकयोकपटकुचाल। क्यो
 धौधारीमलौहिधरकतकाहेनलाल॥६॥ लोगेकठिनकटाछसलकारि॥६॥
 कार्टहियहिडुसालकरितउरहतनटसाल॥६॥ लतिहारेकेरूपकीकहोरति
 इरुकोण। जसोलगतपलद्विगलागतलागतयहकोण॥६॥ नवसिक्कयभराभरा
 तौमागतमुसुकानि। तजतनलोचनलालचीयेनलबोहावानि॥६॥ सनिकज
 लचवखूखलगनउपजसुदिनसनेह। क्योनयतीकेजोगवैलहिसुदेशवदेह॥६॥
 नैणानेकुनमानह। कितोकहोसमुकाइ। तनमनहारेदूहसैतासोकहावसाई॥
 ७॥ जहांजहाठाटोलघो। स्पामभुजगसिरसौर। विनुहाउनमनगहिरहतउगन
 अजौवतठौर॥७॥ रहिछविजलजवसेपरेतवतेछिनुरेन। भरतधरतदूजति
 निरनिलहतछरालौनौन॥७॥ क्योवसिवसियेक्योनिकसियेनेहतहपुरना
 हिलगालंगेलोपनकरैनाहकमनिबधिजाहि॥७॥ लजलगामनमानहोनैना
 मैवसनाहि। येमुहजलतुवधिरगलौअचैतडुटिजाहि॥७॥ जेतवहोतदेखादे
 धीअमिययेकअंक। इगतरेछीदीठिअवकैवाछीकोउंक॥७॥ येमअडोदोलैन
 हा। मुहबोलैअनघाई। चितउरुकीमूरतिवसैचितवनमाहिलघाई॥७॥ चिकी
 जकीसेकैरहीवूमेवालटनीति। काहुदीठिलगालंगीकैकाहुकादीठि॥७॥ कर
 तजातजेतककठिनवठिरससलितोसोत। आलवालउलयेमततरतितोदितोदि

ठहोत ॥ १०८ ॥ है हिय रहति हई इन् ईजु वतिका ज्योति । दाहिहि दाहि लगी दई
 इदेह देवरा होति ॥ १०९ ॥ इरु डधिय अघियान के सुरवसिर जो ईनाहि । देखै यनैन
 ईसते अनदेखे अकुलाहि ॥ ११० ॥ चटकन के उत घट सज्जन नेह गंजीर । फाँको परै
 न चरु फटै रंगो बोल चीर ॥ १११ ॥ नेकुन फुरसी विरह जनै रहल ताकु मिलात । नितनि
 तेहोत हरी हरी बरी फुलत जात ॥ ११२ ॥ छुटन ये अत छनक वसिनेहन गरय चाल । मा
 रो फिरि फिरि मारी ये पूनी फिरै खुसाल ॥ ११३ ॥ निरदैनेहन यो निरखन यो जगत्त यज्जी
 त । यहन के कुँव लौ सुन्यो मरामारि यत मीत ॥ ११४ ॥ अयनी गरजन जो लियत कहानि हो
 रोतोहि । तू प्यारो मोजीय को मोजीय प्यारो मोहि ॥ ११५ ॥ तौल धिमे मन जोल हो सुगति कहि
 नहि जात । ठोड़ी गाउ गयो तत उज्यो रहत दिन रात ॥ ११६ ॥ स्वेद सलिल रोमाच कुलगहि
 उरही अरु नाथ । दियो हियो संग साथ कै हाथ लये हो हाथ ॥ ११७ ॥ नाव कछर सेलाईति
 लकतरी न इत ताकि । पाव कछर सीरु मकि कि गई चोच कहां कि ॥ ११८ ॥ सकै सताइनत
 म विरहि सरसनेह । रहावही लघि डगनि मेदिई सिखा सीदेह ॥ ११९ ॥ इट सरत यो कृत
 लघि रहित रगि के यो लके ध्यान । करलै यो घटल विमल प्यारी पठेये पान ॥ १२० ॥ सौरठा ॥
 सोठेंत न अधिक अनूप रूप लगे । सव जगत को । मोदिगलागे रूप दिगन लगे अति घट
 पटी ॥ १२१ ॥ दोहा ॥ चितवत जित बहिति हियेति रक्खी नैन । जीतेत न दोउ कयै केह नियन व
 रैन ॥ १२२ ॥ अथ यो जानु ॥ फिरि फिरि जेत नि फिर मिलत आगर । ज्यो महरत जोर कायट
 याउ ॥ १२३ ॥ चाह चरी अतिरस चरी सब वात । सोरि सदे सोउ हन के चलै य वरिल खु
 जात ॥ १२४ ॥ रसी जजये दोउ उहन के कहे कहे रैन । क्विसो कुरकत प्रेम रंग जरि चि
 च काई बैन ॥ १२५ ॥ स्वदन प्रति नेह दसा ॥ लइ सोह सी सुन कीत जि मुरली धुनि आन ।
 किये रहत है राति दिन कान न लागे कान ॥ १२६ ॥ उरली के अति चट पटी सुन मुरली धुरि
 धारि । हौनिक से कुल सी सोतौ गई कुल सी मारि ॥ १२७ ॥ जाल रंध्र मगमनि को कहु उजा
 से याई । पीठि हये जगह्यो रल्यो दीसूरो बालाई ॥ १२८ ॥ अहे देहें ईजनि धरै जनि तूले
 हउतारि । नीकेही के कहुये से हेर हिनारि ॥ १२९ ॥ ध्यान आनि दिग प्रान पती रहत
 मुदित दिन रात । पलक कुपत पलकति पलक सी ये जत जीति जाति ॥ १३० ॥ सौरठा ॥
 विरह सुकाई देहनेह कियो अति उह उह्यो । जै सेवरु सै मेह जरी जवा सी जो जेम ॥ १३१ ॥
 होमति सुख करि कामना सु मै मिलन कालाल । ज्वाल मुखा से जरत लुधि अगकी ज्वाल ।

॥४०॥ वसिसकोचदशवदनकेसोउदेष्टतवाल। सियलौसोधननपनहिलगनअग
निकेज्वाल ॥३॥ जवजवैमुदिकाजियेतवसवईसुधिजाहि। आधिनअबलगीरहीआधी
लागतनानि ॥४॥ कहाजयेजो कुरमोमनतोमनसाथ। उडीजातकितहुगुडीतडुडडा
येकहाथ ॥५॥ काकदपरलिखतनवनैकहृतसदेसजौलंत। कहिहैसवतेरोहियोमे
रेहियकेवात ॥६॥ हसितारिहिरसोदईनुमरेजोतादिनालाल। राखतप्रानकपूरलौवहै
चिचिउनीमाल ॥७॥ कहाकहौवाकीदसाहप्राननकेईस। विरहवालजरिकोकरैमरि
बोजयोअसीस ॥८॥ नैकनजानीपरतयौयनविरहतनछाम। उठतदियेलौनादिहरिल
येतिहारोनाम ॥९॥ करीविरहसेसीतईगेलनके। उतचचु। दीनेहूचसवधनकहैल
हैतमीचु ॥१०॥ मरणजलौवरुविरतेयहविचारीजियजोई। मरनमिटैउधयेककोविर
हुडहुडखदोई ॥११॥ कौजनैकैहैकहाजिनउपजेअतिआगि। मनलंगेतनमेलगीचलै
नमंगलगलागि ॥१२॥ चलतचलतलैलैचलैसवसुखअंगलगई। ग्राधपावसरशिसिर
निधिधमोपासवसाई ॥१३॥ औघाईसीसीलखिविरहविकलयात। बीचहीसूखिगुलावगौ
कीटोछुईनगात ॥१४॥ होहावारीविरहवसकैवोरौसवगाउ। कहाजानियेकहतहैस
शिहिसीतकरनाउ ॥१५॥ जहनदाडुपररहैजयेमाहकासैति। तेहउसीरकीरावतीकरे
आवटीजाति ॥१६॥ सारहाओडीआसूवुकसिसांकरवरणीसजल। काहेवदनिनि
मुदइगमलउारेरहत ॥१७॥ दोहा ॥ आदेउँआलेवसनजाडीरुकेराति। साहसकेसने
हवसअलावलीउगेजाति ॥१८॥ गनतागनिवेतेरहाछतकूचछतसमान। अविअ
लियेतिधिवेमलौयरेरहौघटप्रानजात ॥१९॥ गोपिनअसुनभरामदाअसोसअपा
र। उगरउगरकैचलैवरगवरगकीवार ॥२०॥ मारसमारकराउरीअरामरीहिनमा
रि। सीचगुलावघरीअरीवरीहिनवारि ॥२१॥ नैकैबीहिनुदाकरीहरघजुटीनुमलाल
। उरतिवासकुटेनहीवासकुटेहूसाल ॥२२॥ तजतअठानहठप्रयासठमतआदौजा
म। जयेवामबावामकोरहैकामवेकाम ॥२३॥ जोरुनहीयहतमवहैकियेजोजगतनि
केत। होतउदैससिकेजयेमानहुससिहरिसेत ॥२४॥ यलनिप्रगटिवरनीनवठिनहिक
पोलठहराई। असुआयरिछतिपाकूनककूनकनाईक्यिजाई ॥२५॥ यलनचलैचकिसी
रहीठगिसीरहीउदास। अवहीतननितये। कितैमनपटेयोकेहियास ॥२६॥ करकामीडे
उसुमरोगईविरहकुजिलाई। सदासमीयसबिनरुनीठिपिछानीजाई ॥२७॥ हिअैरकै

गरुडनत अवय कौना म बूजे कै उरा रा कैं वौरी कै रे आम ॥ १२० ॥ चित स कुच तन मि
 लत वन त वस परोस के वास । छाटी फाटी जात सुनिता टोवाट उसास ॥ १२१ ॥ अजिला खनै
 तया ईत्रय ता येने सधो । हिये फूमा म । अतिक वहु आवै इतै पलक पसी जै स्पाम ॥ १२२ ॥ तिय
 निजु हिय जौली ग चलत पिय नख रेख खरोट । सुख न देत निसर स इवे । टिखो टिखट घोटा ॥
 १२३ ॥ मैट त वन त जत न जाव तो चित तरसत अतियार । धरत लगै ईल गाई उर नूख वसन
 कार ॥ १२४ ॥ उचौ आच अति विरह कार खौये मर जा जि नैन न की मग जलव है हियो य सी जि
 य मी जि ॥ १२५ ॥ इत ते उत ते इतै चली छसात हाथ । चठे हिउरी सी फिरै लगै उसाथ ॥ १२६ ॥
 मैलौ दयी लयो सुकर छु अत छल कि गो नार । लालति हारो अर गज उर कै लगै आवीर ॥ १२७ ॥
 हित करित मयट मोलगे वा विजना का वाई । टलीति तन की त उचली य सी ना रुई ॥ १२८ ॥ न
 ये विरह वठ थी विद्याधरी विकल जिय वाल । विलटी देखि यरो सन्यो हर विरह सीते हिकाल ॥ १२९ ॥
 छुये निहका गर हिये मई लखाई नयंकु । विरहत चो उघस्यो सुअवसे रुउ के सा आकु ॥ १३० ॥
 लालति हारे विरह अगति अनूप यर अयार । सर से वर से सर सई फिर हू मितै न फार ॥ १३१ ॥
 वन वाग यिक वट पराल वि विरति मत मै न । ऊरु ऊरु कै कै उठै कौ कै राते नयन ॥ १३२ ॥ वि
 रह वियत तन परस हात जो सुख सव अंग । रहि अवरो वउ बौ नयो बलाचली तिय संग ॥
 १३३ ॥ दस ह विरह दारून दसार है न और उपाई । जात ज्यो राखिये पिय को ना उ सुनाई ॥ १३४ ॥
 केरि जतन को उ करै तन की तयति न जाई । केरि जतन को उ करै तन की तयति न जाई ॥ १३५ ॥
 जौलौ जौ जै चीर लौ रहै यो लय टाई ॥ १३६ ॥ मरि वे को सा रुसक कै वै ठे विरह का पार । दौरति
 हो स मुह ससि हिसर सिज सुरज समीर ॥ १३७ ॥ कव की ध्यान लगी ल यौ य ह धर ल गि है
 काहि । उर पति जगी काट लौ मति बह इ दै जाहि ॥ १३८ ॥ यज स्यो आगि विवोग को वस्यो विलो
 चन नीर । आठौ जामर है हियो उ जै सास समीर ॥ १३९ ॥ विरह विद्या जल पर बिनु वस यनु मो
 जिय ताल । कहु जान थ ज थ ज विधि नुर तो धलौ लाल ॥ १४० ॥ अरे यरे न करै हिये जरे बरे प
 रजार । लावति घोरि गुलाव सो मिलै मिलै वन सार ॥ १४१ ॥ भिन छिन बट क सो हिये घरी जेत
 र मै जात । कहि जो चला बिनु हा चितै वोठ न ही मेवात ॥ १४२ ॥ मोरे काहु क हर के नूल ग ई सब
 जीव । आप क हू आसा क हू त सवे क हू कि जीव ॥ १४३ ॥ सुनत यधिक मुह माह सुनि लौ
 लखै चल वै हि ग्राम । बिनु यके बिनु क ही जियत विचारी वाम ॥ १४४ ॥ फिरि सुधि दै सो ई यो
 यहितिर दई निरास । न ई त ई वरु रो द ई द ई उसासि उसास ॥ १४५ ॥ सयाम सुरतिकरि रा

धिकातकतरनिजातीर। असुअनुकरतितरोसकोवनकबरोहेनीर ॥४५॥ धितव
 नमोरेजाईकागौरीमुहमुसकान। लागतलरकाअलीगरेचिजपटततिआनि ॥४६॥
 सनेगरनिहि करगहेतदेवादेवीकाईठि। गडीसोचितनाहाकरनिकललचौहेदीठि ॥
 ४७॥ सघनऊजझायासुखदसीतलसुरभिसमीर। मनहोजाजस्यजोवहेवातमुकोनी
 तीर ॥४८॥ सरतिनतारनतानकीउठैनसुरतठहराई। एरीरागविगारिगौवैरीवालसुना
 ई ॥४९॥ रह्योरेचअतनलहेअवधिउसासनवीर। आलीबागाठतविरहतौपचाली
 कीचीर ॥५०॥ मरीउरीकेटरीविषाकहाचरीचलचाहि। रहीकराहिकराहिअतिअवमु
 खआहिनआहि ॥५१॥ अथसिंगाररसअंगनूवनवर्णनमुखउपमा ॥५२॥ छप्योछवीलोमु
 खरसैनीलेआचरचीर। मनौकलानिधिहलमलौकलिंदीकेनीर ॥५३॥ स्मरउदितकुमु
 दितमलमुखसुखमाकाऔर। चितैरहेतचकुवोरतेनिहचलचवनवकोर ॥५४॥ अंग
 अंगप्रतिविंबपरिदर्शनसेसवगात। दोहरेतेहरेचौहरेचूवनजातेजात ॥५५॥ जाने
 पटमैझिलमिलैजलकअघार। सुरतरुकीमनौसिंधुमेलसैसयलवडार ॥५६॥ उारे
 ठौरउगाउहिंगनैउठे। उमारि। जलकचौदमेरूपठगहासीफासीउारि ॥५७॥ ताने
 मुहदीठिनगैकरिदीहोईठि। इनीकैलागीनलगीलगादयेदिठौनादीठि ॥५८॥ मंगल
 विनुसुरंगमुखससिकेसरआउगुरु। पकनारालहिसंगरसयकियलोचनजगरु
 ॥५९॥ हाहावदनउचारिदृगसुफलकरैसवकोई। राजरोजसरोजनिकेपरैहसास
 सीकीहोई ॥६०॥ अंगअंगनजगमगतदीपसिखासीदेह। दियावडायेहूरहैवडोवडो
 बजेरोगेह ॥६१॥ पत्राहातिथियाईयेवाचरेकेचहुयास। नितप्रतिपून्योईरहेआनन
 वोयउजास ॥६२॥ केसरिकासरिकैसकैचंपककेतिकअरूप। गातरूपलघिजातदुरि
 जातरूपकेरूप ॥६३॥ चाहिलबेलोचनलगेकौनजुअतिकाजौति। जाकातनकीकाहदिठा
 जोरुकाहसीहोत ॥६४॥ कचनतनधनवरनवररहोअंगमिलिरंग। जानीजातसुवास
 हकिसरलागाअंग ॥६५॥ कैकपूरमनिमयरहामिलतअंगकुडालालि। छिनछिनवरा
 बिजछनीलवतलाईतिनुआलु ॥६६॥ देखासोानजुहाफिरतसोानजुहासेअंग। उटाल
 पटतपटसेतहकरतवनौटेरंग ॥६७॥ दीठिनपरतसमानडतिकनकनसोगात। नू
 वनकरकसलगतपरसिपिछनिजात ॥६८॥ पहेरिनचूवनकनककेकहिआवतयह
 हेत। दरपनकेसेमोरबेदेहदेखायिदेत ॥६९॥ करलमलिनआछीछविहिरहजोस

हजविकास। अंगराग अंगनिलग्यौ ज्यौ आरसा उसास ॥४७॥ लिखन वैठि आछी कविहोग
 हिगहिगरवगरूर। नयेन केते जगत के कोई नै तो प्यो प्यो से इर है ज्यौ ज्यौ पियत अघाई।
 सगुण सलो निरूप के जोई न त्रिधा बुजाई ॥४८॥ कहा कुसुम कह कोन दा के निक अरसी
 जोति। जाका अजलाई लिखे आधि उजरी होति ॥४९॥ पहितै रे हा गोरी गरे औ दौरा उतिलाल।
 मन रुधर सी उलकित जई मौल सरी का माल ॥५०॥ बाल छुवा लेतियन मे वैठी आ पुछ पा
 ई। अरगट ही पानू स सेयर ग घ होत लखाई ॥५१॥ लोहे हू सो स सह सका के तत न जहा
 र। अलियन लोई न सिंधु तन घेरिन नावत यार ॥५२॥ अंग अंग कविकाल यट उ यजत जात
 अछे हा बरा पातरी गात की तव जरी सी देह ॥५३॥ वरन वास सुक मारता सवी वधिरती
 सजाई। यथालगी उलावकी गात न जाने जाई ॥५४॥ रंचन सहिये तपहिरयो कंचन सीतन
 बाल। कुनिलाने जानी यरत उर चं पी के माल ॥५५॥ विलकची केने चटक सोल फत सटक
 लौ आई। नारिसलोनी सावरी नागनिलौ उसि जाई ॥५६॥ नैन वर्णन ॥ कहत सवै कविकमल से
 मो मत नैत पछान। तन रुकु गति न बिय लगत उजत विरह कसान ॥५७॥ बेलन सिध चै
 अलि चले चतुर अहरे मार। कानन चारी नैन प्रगना गरनरन सिकार ॥५८॥ औरै बोपक
 नान कनि गनी चनी सिर ताज। मने धनी केने हकी बनी छनी यट लाज ॥५९॥ तन चूषन अं
 जन उगनि घन महा वर रंग। नहि सो जाके सा झिये कहि वे हा के अंग ॥६०॥ रस सिंगा
 र मंजन कि रथं जन जन दैन। अंजन न जन हू विना के जन गंजन नैन ॥६१॥ सारा उरी
 नील के कोट अचूक चुकैन। मो मन मृग कर वर गहे अहारे नैन ॥६२॥ सायक स मधा
 साय स मधा येक नवन रंगे रिरंग गात। नूषाल धि विजल जात उरिल धि जल जात राज ॥
 ६३॥ वरजीत सर मै न का सै सी देखी मै न। हरिनी के नैनानत हरिनी के नैन ॥६४॥ दगल
 गवे धत हि पहि विकल करत। ये तेरे सव ते सर सई छनती छन ॥६५॥ तिय कत कम
 नैति सिध विन जिह जौ हक मान। चली चित वेधत चुकत नहि वंक विलोकन बान ॥६६॥
 नीचे औ नीचे नियट दीठि कुहे लौ दौरि। उठि उचे नीचे दयो मल कुलग चुक जौ रिर ॥
 ६७॥ फुठान जानिन संग्रहै मन मुक सो बैन। या होते मान रुकिये विधि वातन को नैन ॥६८॥
 मान रु विधित अक्कि विसो छरा धि वेकाज। डिग यग यो छन को कियो नूषन या ये नूदा
 ज ॥६९॥ अलियन लो यन सरन को बरी विषम संचार। लगे लगा ये ये कसे हउ करत सु
 मार ॥७०॥ चमच मात चल चंचल नयन विच घू घट यट ज्ञान। मान रु सुर सरिता विम

लजलउछलतपुगमीन ॥२॥ बौरौबलितदगनपरअलिवंजनमृगमीन । आदेदीठि
चितैनिजेहिकियेलालअधीन ॥३॥ फिरिफिरिदौरतदेखियतनिचलेनेऊरहेन । एक
जजारैकौनपरकरतकजावीनैन ॥४॥ फूलेफूदकतरैफिरतयलकटाककरवार ।
करतवचावतवियनयनयाइहजार ॥५॥ आकिसुनैनवर्णन ॥ चितवितवचतनहर
तहविलालनइगवरजोर । सावधाननेवटपरायेजागतकेचौर ॥६॥ जातसयानअ
यानकैवैटगकाहिठगैन । कोललचाईनलालकेलखिललचौहेनैन ॥७॥ अथकेसव
र्णन ॥ सहजसचिक्कनस्यामरुचिसुचिसुगंधसुकुमार । गनतनमनमथअथयलखि
विधुरेसुधरेवार ॥८॥ बैईकरबौरनवहैबौरौकौनविचार । जिनहाउरकोमोहियोति
नसुरजेवार ॥९॥ कुटिलअलककुटियरतहाबठिगोयेतोउदेत । वंकविकारीदेतज्यो
रामरुपैयाहोत ॥१०॥ करसमेठिकुचजुजउलटिअयेसीसघटउारि । काकोमनबाधो
नहीअरोवांधनहारि ॥११॥ कुटेकुटावैजगततेसटकारेसुहमार । मनबाधेवेनीबधे
नालकुवीलीवार ॥१२॥ घौरिपनचभुकुटीधनुषिवधिकसमरतजकानि । हनततरुन
अगतिलकसरसुरकिजालजनितानि ॥१३॥ नासिकावेदवर्णन ॥ वेधकअनिआरेनय
नवेधतिकरिननिवेध । वरवसवेधतमोहियैतोनासाकावेध ॥१४॥ दसनचौकाव
र्णन ॥ निऊहसौहीवावितजुरघौपरतमघनीठि । बौकाचमकठचौदमेपरतचौदसी
दाठि ॥१५॥ कचवर्णन ॥ घरेलसतगौरैगरेधसतयानकीपीक । मनौगुलीचदलाल
कीलाललालडुतिलीक ॥१६॥ लीला ॥ ललितस्यामलीलालननवठीचिबुककुविदून
मधुकाकोमधुकरयरोमनौगुलावप्रसून ॥१७॥ चिबुकवर्णन ॥ कुचगिरिचठिअति
थकितकैचलीदाठिसुखचाउ । फिरिनटनीपरिधेरहायरीचिबुककीगाउ ॥१८॥ कुच
वर्णन ॥ चलननपावतनिगमगमगजगउपज्योअतित्रास । कुचउतगगिवरघौमे
नमवास ॥१९॥ दरतनकुचविचकेचुकाचुयरासारासेत । कविआकनकेअरथलौ
प्रगददेखाईदेत ॥२०॥ बाठततोउरजुप्ररुअरितरुनईविकास । जोअनसौनतिनकेहि
येआवनरुधिवसास ॥२१॥ याईतरुनीकुचउचयदचिरमिठग्योसवगाउ । कुटैठौर
हिहैवहैरजुहैलखविनाउ ॥२२॥ अइजोअवितनवसनमिलिवरनिसकैसोवैन । अंगरू
पआगीउरैअंगीअंगडुरैन ॥२३॥ सौनजुहीसीजगमगतअंगजोवनजोति । सुरंगकसो
ठेकचकीडुरंगदेहिउतिहोति ॥२४॥ असजीजेतीसंपतिसुमकोतेतीसमुतजोर । वउत
जाततौतौहोतकठौर ॥२५॥ जंगवर्णन ॥ जंघजुगललोयेननिरेकरेमनौविधिमेन ।

कलितरुनमुखदेनयेकेलतरुनदेवदेन॥२१॥लहलहाततनतरुईलधिलगलौल
 फिजाई॥लौलाकलौयनजरालोयलेतलगाई॥२२॥धिडावर्णन॥पाइमहावरदेनकोना
 इनवैठआई॥फिरिफिरिजानिमहावरायेडामीउतजाई॥२३॥कोहस्सीयेडानकाबाला
 देबसुजाई॥पाइमहावरदेनकोआपुजईवेपाई॥२४॥धुजावर्णन॥सालतहैनटसा
 लकेहुनिसतनाहि॥मनमयनेजानोकेसेधुजाधुजाजियमाहि॥२५॥अंगुरीवर्णन॥गौ
 रगोनयअरुणकलसुयामछविदेई॥लहतमुकुटिरतिपलकुयहनैनत्रिवेनीसई॥
 २६॥नधिरुचिचरनउठिकैठिगलगाईनिजसाथ॥रहारावरविहठिलैगयोहथीहथीम
 हाथ॥२७॥सुकमारवर्णन॥मैवरजेकैवारतउतकितरेतकरौट॥पवरीलगैलावकी
 जैहैदेहवरोट॥२८॥कुलेपरकेउरनसकैनयेधुआई॥जुजकतफूलगुलावकेपाई
 ॥२९॥नूयनजारसजारहैकौयहतनसुकुमार॥सुधपाईनठरिपरतसोभाहकेजा
 र॥३०॥सिरसकुसुममेउरातअलितकिजकिलयटात॥दरसतअतिसुकुमारतापर
 सतमननहितात॥३१॥अरुणवरनतरुनीचरनअंगुलीअतिसुकुमार॥चुअनैसुर
 गमंगसेमनौचयछविछुअनेकजर॥३२॥यगयगमगअगमयरतिचरनअरुनडनि
 मूनूल॥ठौरठौरलधिअतउठैउयहरिआसेफूल॥३३॥चुनरीस्यामसनारनजरुव
 ससिकेअउहारि॥तेहदवावदंतनादलौनिरघनसासीतरि॥३४॥नारीवर्णन॥जरी
 कोरगोरेवदनवठाघराघराछविदेछु॥लसतिमनोविजुराकिसारदससियरिवेछु॥
 ३५॥गौरगदकरेयरैहसतकपोलनगाउकैसीलसतगवारइहिसुनकिरवाकाआ
 उ॥३६॥अनूषअगमहिमा॥सहजस्वोतयचतौतिआयहिरतअतिउतिहोति॥जल
 चादरिकादीयलौजगमजातनजोति॥३७॥वेदीवर्णन॥कहतसवैवेदेदियेआंक
 दशगुणहोत॥तिपरिलारवेदीलगतअगुणतवठतउदोत॥३८॥वेदीभालतमोल
 मुखसीससिलसिलैवार॥इगआजेराजेघरेयहीसहजसिंगार॥३९॥तियमुखल
 धिहेराजडावेदेवडैविनोद॥सुतैनसनेहमानहलियेविधुपूरणवधगोद॥४०॥
 भाललालविदेछुईछुटैवरकुविदेत॥गहोराहअतिआहिकरिमनससिसूरसमेत॥
 ४१॥पंचरंगवेदाघरीउठाजागिमुखजोति॥पहरीचौरचुनौतिटयाचटकचौगुणी
 होति॥४२॥भालललालवेदेललितआवतरहेविराज॥इडकलाऊजमैनसीमनौरा
 हनयजाति॥४३॥मंजनवर्णन॥मुहयघारिमुहहरमिजैसीससजलकरछाई॥

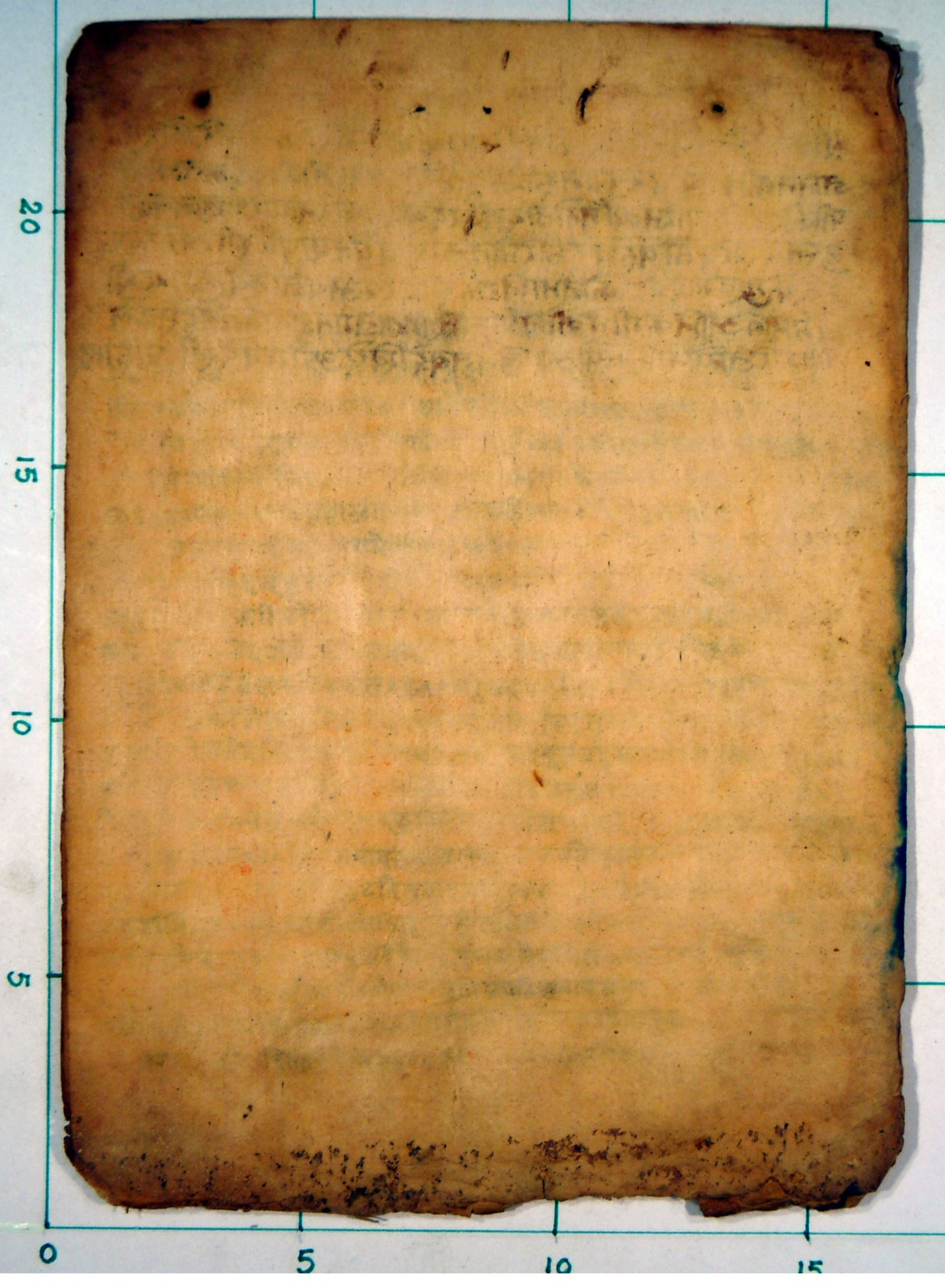
मोरउवैघूटनयननारिसरोवरहाई ॥ ५० ॥ टीकावर्णन ॥ टीकोलसनलिलाटपर
 नीकोजरितजरारै ॥ छविहिवठारतरविमनोसासिमंडलमेआई ॥ ५१ ॥ धातीटट
 केपहिरैधोवतीमुखचटकेजे ॥ तिलसतरसोईकेवगरजगरमगरउतिहोति ॥
 ५२ ॥ सोहतधोतीसेतमेकनकवरनतनवाल ॥ सारदिदवीजरीजराजादरकाजि
 नलाल ॥ ५३ ॥ तरिवनावर्णन ॥ लसतसेतसाराठयौतरलतरिवनाकान ॥ पस्याम
 नोमुरसरैसलिलवैरप्रतिबिंबविहान ॥ ५४ ॥ तरिवनकनककपोलडुतिवीच
 बीचकनिकान ॥ लाललालचमकतचुनीचौकाचसकसमान ॥ ५५ ॥ अजरुतरेव
 नातस्यौसतिसेवतयेकअंग ॥ नाकवसवैसरिलयौवसिमुकतनकेसंग ॥ ५६ ॥ वैसरि
 वर्णनविभ्रमअलंकार ॥ वैसरिमोटाडुतिजलकयरीअधरभरआई ॥ चूनीहोईनवतर
 तियकौघटयोछेजाई ॥ ५७ ॥ वैसरमोतीवर्णन ॥ जटितनीलमनिजगमगतसीसुहाईना
 क ॥ मनुहअलीचपकफलीवसिरसुलेतनिसांक ॥ ५८ ॥ वैसरिमोतीधवलुहोकोचूके
 डालजात ॥ पियोकरतितियअधरकोरसनिधरकदिनराति ॥ ५९ ॥ नयवर्णन ॥ यह
 दोहातीसगयतूनयगर्वानसाक ॥ जेहियहिरैजगद्वगगरसितलसतहतसीनाक ॥ ६० ॥
 लौगवर्णन ॥ जदियलौंगललितोतडुलूनपहिरयेकआंक ॥ सदासंकचठियेरेहैरहैचठी
 सीनाक ॥ ६१ ॥ तरिवनमुनस्पकार ॥ लसैमुलस्पतियसुवनयोमुकतनछविपाई ॥ मानरुप
 रसकपोलकेरहेस्वेदकंकाई ॥ ६२ ॥ मुकताहार ॥ जलमजलधिपानियवमलजौजगआ
 धुअयार ॥ रहीउनीकैगरपरेचलेममुकताहार ॥ ६३ ॥ गहेनयेकोगुनगरवहसीसवैसं
 सार ॥ कुचउचयदलालचरहेगरपरेहोहार ॥ ६४ ॥ उरमानिककीउरवसीउटतघटत
 इगदाग ॥ फूलकतवाहिरनयमनोपियहियकोअनुराग ॥ ६५ ॥ पाधेलवर्णन ॥ किसेहाय
 लचितचाईलगिवसियापलतुआयाई ॥ पुनिपुनिसुनिमुखमधुरधुनिकोलालललनचाई
 ॥ ६६ ॥ चूरावर्णन ॥ रस्यौठीठुठाठसगहेससिहारहैयानसूर ॥ सुसौनमनुमुरवानिचुंजिजौ
 चूरनचुपिचूर ॥ ६७ ॥ अनवटवर्णन ॥ शोभितअंगुठापायकेअनवटजस्यौजरारै ॥ जीस्यौत
 रिवनडुतिसुठरियस्यौतरनिसनियाई ॥ ६८ ॥ आगोयालकुंडलवर्णन ॥ मकराकतगोया
 लकेशोभितकुंडलकान ॥ मनोधस्योहियघरसमरेउठेराशिनिसान ॥ ६९ ॥ गुजमाला
 वर्णन ॥ सधिसोहतगोयालकेउरगुंजनकीमाल ॥ बाहेरलसतमनोपियदावानलकीज्वा
 ल ॥ ७० ॥ चंद्रिकाभुकुटवर्णन ॥ मोरभुकुटकेचंद्रिकनयौराजेनंदनंद ॥ मनुशशिशोरवर
 कीअकसकियेसेधरसंतवंद ॥ ७१ ॥ पीठपटवर्णन ॥ सोहतवोठेपीतपटस्यामसलौने

गात। मनोनीलमनि सैलयर आत ययस्यौ प्रजात ॥५०२॥ तमाकूवर्णनं ॥ वोठउजैहा
सीनरीडगजौहनकीचाल। ममनकहूनयालियोपियततमाकूलाल ॥५०३॥ घूंघटव
र्णनं ॥ करउठाईउचेकरतउसरतपटगुजरोट ॥५०४॥ वठतनिकसिकुचकोररुचिकठ
नगौरउजभूल। मनुलुटिगोलोचनचुटतलोटातउचेफूल ॥५०५॥ अथसिंगारदूतीअला
यनयकप्रति ॥ होरीफालबिरेजिहोक्कविहिक्कवीलेलाल। सोनजुहीसीहोतिउतिमिल
तमालतीमाल ॥५०६॥ दूतीअलापु ॥ गग्योसुमनकैकैसुफलआतयरोसनेवारिवारा
वारीआयनीसीचिसुददतावार ॥५०७॥ तोपरवारेउरवसीसुनराधिकेसुजात। तूमेह
नकाउरवसीससमान ॥५०८॥ बरीयाटरीकांनकाकौनवहाउवानि। आककलीनरली
करीअलीअलीजियजानि ॥५०९॥ फूलीफालीफूलसीफिरततोविमलविकास। भोरतरैआ
होहितेचलततोहियियास ॥५१०॥ गहिलीगर्जनकाजियेसमयसंगहायाई। जियकीजीव
निजेठज्योमाहनकाहसोहाई ॥५११॥ सबहीतेसमहोतिछिनचलनसनंदैयाठि। बाहीमै
ठहरातियहकलनवालीदाठि ॥५१२॥ नाइकप्रति ॥ घामघरीकनेचारियेकलितललित
अतिपुंज। जमुनातीलतमालतरुललितमालतीकुंज ॥५१३॥ कहालेकुंगेबेलनेतजोअ
टपटीवात। नेकुहसोहेहैनइजोहैसोहैभात ॥५१४॥ आयआपुनलीकरीमेटनमान
मरोर। दूरिकरौबहदेविहैकलाकगुनिआकोर ॥५१५॥ जोबाकीजनकादसादेबोचाह
तआपु। तोबलिनेकविलोयेचलियचकायपचापु ॥५१६॥ नायदरसन ॥ धनियहुडई
जलधौजहातज्योइगनउबदंद। नवमानपूवउयोअहोअबूलवचंद ॥५१७॥ मारोम
हुनुनननरागाहिउभारामिगहि। बाकोअतिअनग्रहटोमुसुकाहठविनुनाहि ॥५१८॥
पेरीयहतेरीदईकवहूप्रहितनजाई। निहन्नरीहीराधिकुतूरुवियेनआई ॥५१९॥
नायकप्रति ॥ कहालउतैइगकरेपरेलालवेहाल। कहुमुरलीकहुपीठयतकह
उकुदईनमाल ॥५२०॥ तौरसराचोआनवसकहेकुटिलमतिकूर। जीवनिवौरीको

लगे चौराचाधि अगूर ॥ ५१ ॥ नायक प्रति ॥ वडे कहावत आपु को गरुषे गो पाना
 था। तौ हृद हो जौ राधि हो जौ राधि हो हाथन मनल धिहाय ॥ ५२ ॥ तूम जमान हिमक
 तई दये कपट वित कोटि। जौ गुनही तौ राधिये आधिन माहि अगोठि ॥ ५३ ॥ केतनि
 कुल कुल वध काहिन केहि सिधदान। कौन तजीन कुलगली कै मुरली रसलीन ॥ ५४ ॥
 वहि किनय हि वहि नायन जवत ववीर विना सु। वचैन वदी सेबल हचल घे सुले मा
 सु ॥ ५५ ॥ नैये विससि है हिल धिनये उजन सडु सुजाई। अउ परपान नर हत कोटेलौ
 लगायाई ॥ ५६ ॥ हती अला पुनायक प्रति ॥ सुकुचिनर हिये स्पाम सुनिसतरो सेये वय
 न दे तरघो हे चित्त के हेर धा निचौ हे नैन ॥ ५७ ॥ बाल बेलि सुखे सुख दय हरु घेरु घघा
 म। फिरद हउ हा का जाये सुर सखी विधन स्पाम ॥ ५८ ॥ सघन कुतघन तिमिर अधि
 क अधे रा राति। तव दूरोन हि स्पाम य ह दाय सिखा सी राति ॥ ५९ ॥ मान मोचन उपाय ॥
 केह सहवात लगे य के ने दउ पाई। हठे दिठ गवै सो चलिन ली जै सुरंग लगार्ई ॥ ६० ॥
 विभ्र महाव ॥ जो सिर धरि म हि मां महाल हि अत राजा राई। अगट तज उता आयनी मुकु
 ठ सोय हिरतियाई ॥ ६१ ॥ हसि हसाई उर लुई उतिक हिरुयै हे वैन। कूकित त कित कै
 त किरहात कत तिलौ के नैन ॥ ६२ ॥ अनर सहस सयाई येर सिकर सीया स। जे सा गाउ के
 कठिन गाठै न रा मिठास ॥ ६३ ॥ ठाठियरो सनदी ठि कै कहे जेग हे सयात्र। सवै सटे सो
 हा कह्यो मुसुका हठनी मान ॥ ६४ ॥ चित वनिरुषे डगन की हासी बिनु मुसुका न। मान
 जनायो मान ना लियौ जानिये जानि ॥ ६५ ॥ सौ हे रूचा कै न नै किता दिवाई साह। ये हो
 क्यौ वैठि किये औठा वैठा जौह ॥ ६६ ॥ रहेल डूह वै लाल होल धिव हचाल अनूय। किटा
 मिठा सुदियो दईये ते सलै नै रूय ॥ ६७ ॥ सरस मिलन चित तुरग की करिये मात उठान।
 जौ ईनि बाहे जातिये घेल प्रेम चो गान ॥ ६८ ॥ नहिर हिलौ हिय राधनौ नहिर लौ अर धंग।

येकतही करिराखियै अंग अंग प्रति अंग ॥ १२ ॥ किन कुच वीले लाल बहन हिज बलौ
वतलाई ॥ उषम उषय उषका तौल गिया सबुज आई ॥ १३ ॥ तू मोहन मन गडिरहा गाडी
गड निगुवालि ॥ उठन सदान यलाल सी सौतिन के उर साल ॥ १४ ॥ चलो चली छुटि जाई गो
हठरावरे सकोच ॥ घरे चठाइ हेतु अलि आये लोचन लोच ॥ १५ ॥ केटी जतन जो मै करी दी
हेतुम है मिलाई ॥ राधा चंयक माल लौहिय लय टाई ॥ १६ ॥ अनि आने दीरघ दगनिका
जानत रुणिसमान ॥ बह चितवनि औरै कछू जे हिवस वोत सुजान ॥ १७ ॥ बाहे दिन तेनामि
तो मान कालरुको मूल ॥ जले यधारे पाहुने कौ गुठहर को फूल ॥ १८ ॥ उषराइन चरचान
ही आनन आनन आन ॥ लगी फिरै ठका दिये कानन कानन कान ॥ १९ ॥ ल्याई लाल विलोकि
ये जिअ की जावनि मूल ॥ रिहा जौन के कौन मै सान जुहा सी फूल ॥ २० ॥ मान करत बरजतन
होउरत दिवावन सौह ॥ करारि सौहे जातिगे सहज हसौहे जौह ॥ २१ ॥ मनन धरत मेरो क
होतू अयने सयान ॥ अहे परनियर मेमका रुधयार नियार ॥ २२ ॥ अहे कहन कहाकह्यो
तो सौन नद कि सार ॥ वउवोले कत होत है वदे उगनिके कोर ॥ २३ ॥ ओगति औरै वचन नयो
वदन रंग और ॥ दिवस कते पिय हिय वसी फिरै चठाई तौर ॥ २४ ॥ जइ पिते जरो हाल व
ल चल कौलगान वार ॥ तौ गैवो घरको नयो घैउको सहजार ॥ २५ ॥ अय अयोक्ति जया
प्रति नात यछ ॥ कैसै छोटे नरनटे सरत वउने के काम ॥ मठोद मा मोजात कहुलै चूहे के
चाम ॥ २६ ॥ संयतिके समुदे सरन वत उहुनिके चानि ॥ विजो सतर कुचणी चनरनर मवि
भोका हानि ॥ २७ ॥ वउने रुजे गुनन विनु विरद वडाई पाई ॥ कहत धतूरे सैकन कगहनो
गठोन जाई ॥ २८ ॥ कनक कनक सो सौगुनी मादकता अधिक आई ॥ वहि वासवौ राइ जगय
हि वासवौ राई ॥ २९ ॥ संगति सुमति तया वहाय देहोई सुगंध ॥ राधो मेलि कपूर मै हाग
न होइ सुगंध ॥ ३० ॥ सोहत संग समान सोय है कहै सब लोग ॥ पान पीक वोठन वनी का
जहने न जोग ॥ ३१ ॥ सबै सोहाए लगे वसे सोहा ठाम ॥ गौरी मुह वेदाल सै अरुणायत

सितस्याम ॥ २२ ॥ सर्वैह सैकरुतारहै नागरुता की नाउ। गयो उरव गुन को सर्वै अहेग
 वेलेगाउ ॥ २३ ॥ बरु किवडाई अयनी सुत सजन मति चूल। बिनु मधुमधु करके हिये
 गडेन गुउहर फेल ॥ २४ ॥ स्वारथ सुकृतन समज था दे शिविहंग विचारि। वाजिय राये पा
 नियरत ह्यही रुनमारि ॥ २५ ॥ संगति दोष सबै सबन कहै तेसा चैवैन। कुटिल वंक मू
 सकई कुटिल वंक गति नैन ॥ २६ ॥ नरका औ नल नीरका गति से कै करि जोई। जातो नीचो
 ह्यो चलै ते तोउ चै होई ॥ २७ ॥ बठत बठत संयति सलिल मन सरोज बठि जाई। घटत घटत
 सुन फिर घटै वनु समूल कुजिलाई ॥ २८ ॥ कोरि जतन कोउ करै परै न प्रकृति हिची च। तलव
 लजल उचे चै न प्रकृति हिची च ॥ २९ ॥ गुण गुण सक को कहै निगुना गुना न होत। सुनो क
 रुतै अरु कतरु क समानोत ॥ ३० ॥ उस हड राज प्रजान को क्यो न होई दुष्ट दंद। जग करत मि
 लमाव सरविचंद ॥ ३१ ॥ ससै वराई जा सत ताही को सनमान। जलौ जलौ कहि कुंठिये घोटा
 ग्रहनयदान ॥ ३२ ॥ जो बाहै नाचटक घट मैलो होइ नमिज। रनराज सनकु आईये नीह चीक
 नाचिज ॥ ३३ ॥ कहै ये है सुतिस भित वसम पै सिधानी लोग। नाति दवाव जने कुहा पाव कराजा
 रोग ॥ ३४ ॥ को कहि सकै वडेन काल वै बडायो मूल। दीरु दई गुलाव को इमउर न वै फूल ॥
 ३५ ॥ समै समै सुंदर सवे रूयन काई। मन कारुचि जित नाजितै ते तीते तीरुचि होई ॥ ३६ ॥ दि
 नदश आदर राई कै करिलै आपु वधान। जौ लगिका गसरा धय क्षतौ लगितो सनमान ॥
 ३७ ॥ मूउ चठाये हेर है यचो पीठि चकजार। रहेग हेयर राखि वोत उहये परचार ॥ ३८ ॥ काल
 दसहरा वीति ये घर मूरख जिय लाज। उरौ फिरत कत उमन मे नील कठ वै काज ॥ ३९ ॥ वैन इ
 हाना गरव डे जिन आदर तुव आव। फूल अफला गयो गवई गाव गुलालव ॥ ४० ॥ नागरि विवि
 ध विलासत जिव से गवई लिन माहि। मूठयो मे गवे कितू कत बोलत अठलाह ॥ ४१ ॥ येहि आ
 सा अते क्योर है अलि गुलाव के मूल। है स है फेरि वसत रिनु इउर न वै फूल ॥ ४२ ॥ जिन दिन
 देखै वै कुसुम गई सुवाति वहार। अब अलि रहै गुलाव में अघत कटीली उर ॥ ४३ ॥ करिलै सूधि
 सराहि कै सबै रहेग हिमौन। गाधी अध गुलाव को गवई गावौ कौन ॥ ४४ ॥ चले जाऊ को



[illegible]

करे हाथ नि को को पार। नहि जानत य पुरव सैं वैं बी वाउ कु नार ॥ ५२ ॥ जा के ये कै ये कहु
जग को सावन कोई। सो नि दाघ फूलों फरै आक उह उहो होई ॥ ५३ ॥ महि पाव सरितु राज
पत जु तरिवर चित मूल। अयत न ये विनु इहो कै न व दल फल फूल ॥ ५४ ॥ नीचे ही हल
सोरहत गहे गोद के पोत। जौ जौ माथो मारियो तौ तौ उचे होत ॥ ५५ ॥ बुरो बुराई जौ त
जौ तौ चित बरो उरात। जौ न कलंक मय कल विग नै लो ग उत पात ॥ ५६ ॥ वो के व दे न है स
कै लगे सतुर कै गौ न। दीरघ होई न ने कहुं फार नि हारे नैन ॥ ५७ ॥ मावरि अन जो वरि न रै क
रा करि व क वा द। अपनी अयनी जात को कुटैन सहज स वा द ॥ ५८ ॥ पिय मन रुचि कै वा क क
ठिन मन रुचि हा हि सिंगार। ला धि करे। आ धि व ठै व ठै व ठा वे चार ॥ ५९ ॥ काल चूत उता विना जु रै
न और उ या इ। फिर ता के टारे बने पावे प्रे ल दाई ॥ ६० ॥ सीतल लता रु स वा स का महि माघ
टन मूल। पीन स वारे जौ त जै सो राजा निक फूल ॥ ६१ ॥ के फुले ल को आव मन मी ठो क हत स
रा हि। चल चल गंधी अघ हा अतरु देखा वत का हि ॥ ६२ ॥ गिरि ते उचे रसिक मन बू उ ते ह जार।
व है द शाय न सु न र के छे म य यो अ यार ॥ ६३ ॥ ललन स लेने अरु रहे अति स ने ह सो या गि।
तन क क चाई दि उ ब सुर न र लो मु ह ला गि ॥ ६४ ॥ पति रति अव गु न घन ब ठ त मान कु को सीत।
जा सु क धिन कै अरि व दौ र व नी व न न व नी त ॥ ६५ ॥ व्या स म स्यो पि ज रा य स्यो सु आ स मै के फेर।
आ हर दै दै चालिये वा सैं ये व ल की वी र ॥ ६६ ॥ या ये ल पा प ल गी र है लगे अ मो लिक लाल। जो
उर रुं के चा स है बं दी भामि न जाल ॥ ६७ ॥ घरे अ द व ई ठि ला ह ठी उ सु य जा व त त्रा स। उ सह
संक वि ष का करै जै सी सों ठि मि ठा स ॥ ६८ ॥ ज धा पि सुं द र सु घ ट य नि स गु नौ दा य त दे ह। त उ
प्र का श करै ति जौ स ने ह ॥ ६९ ॥ ये क नी ते च ह ले प रे दू ज व हे जार। कि ते न औ गु न गु ण करै वै
नी च ठ ती चार ॥ ७० ॥ कहे जे व च न वियोग नी विर ह बि डाल अ कु लाई। किये न को अ सु आ स
हित सु आ ते व च न सु नाई ॥ ७१ ॥ पटु पा ये न पु कारे स परे य रे ई संग। सु खे परे वा पु हि म म मे
ये कै तु हा वि हें ग ॥ ७२ ॥ ग ठ ज ना व रु नी अ ल क चित व न ने ह क मान। अ गु य का ई ही च डै तरु
न तु रं ग म ता न ॥ ७३ ॥ त न जु ट नि स वा द सी कौ न वा प रि जाई। तिय मुख अनि आ रं न ह न हि
प जु टा मि ठाई ॥ ७४ ॥ सं क ट चो ठि तूर हू हो स सिल खौ च ठिन अ टा व चाल। स च उ रु वि नु ही स
सि उ दै जु है अ र व अ काल ॥ ७५ ॥ दियौ अ स घ ना चे च लौ सं क ज्ञा नो जाई। सु चि ता कै औ रो स
बै स सि हि बि लो कै आई ॥ ७६ ॥ चो ठि चा द ति य च ठि अ टा दे ष त प डी न सं क। नंद लाल सों यह
स र वी के स फु ल क लं क ॥ ७७ ॥ ना ज व र्ण न ॥ तिय सु न त ह री ता लि का हरि सों ला गे नैन। उ य
र उ य र हा ग ई उ प रो हित के वैन ॥ ७८ ॥ ती ज व त सौ ति न से जे नू व न व स न स रार। स वै म र

गजै सुर करी बहावे चौर ॥ ७३ ॥ उघोसरदरां कास सी कौन करत चित चेत । मन रुमदन
 कृतियाल की छाह गीर क विदेत ॥ ७४ ॥ उई जै कै ज सुधा दी यति कला बहल छिदी ठिल गार्ई । मनै
 अकाश अगसि पिये कै कलील बाई ॥ ७५ ॥ ऊं जमवन वै ठी हुते कहा कहे मै लाल । कैली कैलि
 धनु मिमै उतर दी हो वाल ॥ ७६ ॥ वैठिरही अतिस घन वैठि सदन तन माह । देखि डुप ह
 री जेठ के छाहौ चाहत छाह ॥ ७७ ॥ चलत मुरु मारु सुनिहाय रोसी नाह । लसित मासे के ड
 गन हासी असु अनु माह ॥ ७८ ॥ प्रति विंवन जै साहि उति दीपत धर पन धाम । सब जग जी
 तन को कायो चकावू ह मनु मान ॥ ७९ ॥ नाव कउ नरौ हे न ये ककु क प्रस्यो भर आई । सीय
 हरा के मिसिहि ज्यौ निशि दिन होरत जाई ॥ ८० ॥ कन दोबारा यो ससुर वरू पौर धहि जानि रू
 पर हच टे चंगल ग्यो मागन रावत आनि ॥ ८१ ॥ उन हाई सब तोल मेरही जो सोति कहार्ई । सु
 तै औ चिष्यो आपु ते करी असे धिल आई ॥ ८२ ॥ वलित ललित अम सेवक न अरु वदन मु
 ख तैन । वन बिहार थाकातरु खरे थकाये मै न ॥ ८३ ॥ नाज करत हर हि धरत नाजुक कमला
 बाल । नजत नारु नई नात कै घन चंदन माल ॥ ८४ ॥ सारठा ॥ ज्यौ मनु री मत नै ह आनि इहा
 विरहा चरै । ओठो मा म अछे ह मृग जु वरत सतरहत ॥ ८५ ॥ दोहा ॥ यग सो है यगयी करै
 गसरि सो है सवै नैन । बल सो है कत का जियत अल सो है नैन ॥ ८६ ॥ कहा अरंग नील घत हो
 घरी डुपरी माह । अहिकारी प्याराल गै गरउ ग याह की छाह ॥ ८७ ॥ वहन रती जै साही मु
 खल बला घन को फौज । जाविन राखीर रुचलै लोला घन की मौज ॥ ८८ ॥ बरि जो वत हार
 येव नै ॥ मोहि न रासोरी जिहै उरु कजों किये कवार । यरिका वन हार येव नै नारिज वार ॥
 ८९ ॥ रुक्यो सां करी कुजु मे करुत जहां रुकरत रुकरात । मंद मंद मारत तुरंग नि सुदन आ
 वत जात ॥ ९० ॥ ॥ इति विहारी दास कृत सत सैया संपूर्ण ॥ ॥ संवत् १९२६ माघ
 शुदि ७ रोज ६ तदिने लिखितं ॥ शुभम् ॥



